सी डैक
CDAC

सूत्रपात

गृह पत्रिका – द्वितीय अंक

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, मोहाली

हिंदी

सूत्रपात

(वार्षिक गृह पत्रिका)

इस अंक में

कार्यकारी निदेशक की कलम से

श्री जगजीत सिंह भाटिया

कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

दीपक राणा

जन सम्पर्क एवं हिन्दी अधिकारी

सम्पादक मण्डल

सुनीत खेतरपाल, शैलेश सिंह, अनु आहुजा

सहयोग

सुषमा कौशल, प्रीतिका खेरा

निःशुल्क वितरण के लिए

नोट :– प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने है सम्पादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सूत्रपात
वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका

अंक (क) **अनुक्रम**

संदेश — कार्यकारी निदेशक की कलम से

सम्पादकीय

अंक (ख)

शीर्षक	पृष्ठ सं.
१. भारत की राजभाषा नीति : हमारा दायित्व	१
२. प्रगत संगणक विकास केन्द्र, मोहाली	२
तकनीकी लेख	
३. रेडियो आवृत्ति पहचान प्रौद्योगिकी	३
४. मल्टीमीडिया–एक रचनात्मक दृष्टिकोण	४
५. परियोजना प्रबन्धन	६
६. प्रशासन शब्दावली	८
निबन्ध / लेख	
७. प्रतिस्पर्धा की परिकाष्ठा	९
८. भ्रष्टाचार – कोई नई समस्या नहीं	१०
९. इंसान की पहचान	१२
१०. सब को चाहिए भगवान	१३
११. आत्म विश्वास	१४
कहानी	
१२. किस्मत	१५
१३. हर किसी का अपना महत्व	२१
१४. पिता का प्यार	२२
१५. स्थापना दिवस समारोह, विविध गतिविधियां, विविध कार्यक्रम	१७-२०

शीर्षक	पृष्ठ सं.
काव्य शास्त्र	
१६. अजन्मी बेटी की पुकार	२३
१७. गीता सार	२४
१८. बेटी की पुकार	२५
१९. हुस्न बेकरार	२६
२०. साईं कृपा से वर	२७
२१. मन में घर	२७
२२. यारी और शायरी	२८
हास्य-व्यंग्य	
२३. नसीहत	२९
२४. राजू और पापा	३०
२५. ऐसी हमारी लाईफ हो	३१
२६. मंहगाई की दाल	३१
कुछ आपके लिए	
२७. हाथ का साथ	३२
२८. रोचक गणित	३३
२९. सी–डैक राजभाषा कार्यान्वयन समिति	३४
३०. बागवानी	३५
३१. प्राथमिक चिकित्सा – एक जरूरत	३६
३२. उद्यमी प्रेरित व्यक्तित्व – आज की जरूरत	३८
३३. उद्यमी तथ्य	३९
३४. उद्यमी प्रेरित व्यक्ति अलग होते हैं	४०

मुद्रक : **आज़ाद हिन्द स्टोर्ज प्रा. लि.**
एस.सी.ओ. ३४, सैक्टर १७–ई, चण्डीगढ़
दूरभाष : ०१७२–२७०४५११–५१४

कार्यकारी निदेशक की कलम से

अपने केन्द्र की राजभाषा गृह पत्रिका (सूत्रपात) के द्वितीय अंक के माध्यम से आप सबको संबोधित करते हुए मैं हर्ष तथा उल्लास का अनुभव कर रहा हूँ। यह पत्रिका सी–डैक में राजभाषा के प्रयोग तथा इसके विकास को बढ़ाने के लिये केन्द्र के कर्मचारियों तथा अधिकारियों का सामूहिक प्रयास है।

इस प्रत्रिका में केन्द्र के लेखकों तथा लेखिकाओं के विभिन्न पहलुओं पर अपने मूल्यवान विचार पढ़े जा सकते हैं और इसी के साथ–साथ केंन्द्र में हुई विशेष गतिविधियों का चित्रांकन भी इस प्रत्रिका में देखा जा सकता है। मुझे विश्वास है कि इस तरह की पत्रिका राजभाषा के विकास और कार्यालय में कर्मचारियों को हिन्दी मे कार्य करने को प्रोत्साहित करती है।

मैं उन सभी कर्मचारियों, अधिकारियों और संपादक मण्डल का इस पत्रिका (सूत्रपात) के द्वितीय अंक को प्रकाशित करने पर धन्यवाद और हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

जगजीत सिंह भाटिया

सम्पादकीय

किसी भी कार्यालय, संस्थान अथवा विभाग की गृह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण और कुशल प्रयास माना जाता है। इसी के साथ–साथ गृह पत्रिका अपने कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रम तथा समारोह इत्यादि को भी प्रकाशित करती है। हमारे देश के अनेक हिन्दी साहित्य प्रेमियों और विद्वानों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए समय–समय पर प्रयास होते रहते हैं ठीक इसी तरह हिन्दी भाषा के विकास के लिए सी–डैक के कर्मचारियों और अधिकारियों का इस सूत्रपात के द्वितीय अंक को प्रकाशित कर राजभाषा के विकास प्रति अपना सामूहिक प्रयास व्यक्त किया है।

मैं अपने कार्यकारी निदेशक श्री जगजीत सिंह भाटिया का उनके मार्गदर्शन और इस गृह पत्रिका को प्रकाशित करने के प्रोत्साहन के लिए अति आभारी हूँ। आभारी हूँ मैं अपने संपादक मण्डल का जिनके कुशल अनुभव तथा योगदान से सूत्रपात आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सूत्रपात के द्वितीय अंक में आप सी–डैक के लेखकों का विभिन्न पहलुओं पर जैसे कि तकनीकी लेख, निबंध, कहानी, कविता, हास्य व्यंग और उनके आन्तरिक विचारों पर मूल्यवान एवं रचनात्मक विचार पढ़े जा सकते हैं।

सूत्रपात के प्रथम अंक को पाठकों द्वारा काफी सराहना मिली है। मैं उन सभी पाठकों का हार्दिक सादर धन्यवाद करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनकी सराहना तथा इस पत्रिका को और रोचक बनाने के लिये उनके मूल्यवान सुझाव मिलते रहेंगे।

हार्दिक धन्यवाद सहित,

दीपक राणा

लोक सम्पर्क एवं हिन्दी अधिकारी

भारत की राजभाषा नीति : हमारा दायित्व

सत्यमेव जयते

- ❖ सभी सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, परिपत्रों, प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टों या प्रेस विज्ञाप्तियों, कार्यालयों से निष्पादित संविदाओं और करारों तथा निकाली गई अनुज्ञाप्तियों, अनुज्ञा–पत्रों, सूचनाओं और निविदा प्रारूपों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करना सुनिश्चित करना चाहिये।
- ❖ उपर्युक्त कागज़ों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों की यह जिम्मेदारी होगी कि वे ऐसे दस्तावेजों को हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने, निष्पादित या जारी किए जाने के बारे में सुनिश्चित कर लें।
- ❖ कोई भी कर्मचारी किसी फाईल पर टिप्पणी या मसौदा हिंदी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद अंग्रेज़ी में प्रस्तुत करें।
- ❖ सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया सम्बंधी अन्य साहित्य द्विभाषी रूप में अर्थात हिंदी और अंग्रेज़ी में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल और प्रकाशित किए जाएं।
- ❖ साथ ही रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नाम पट्टी, सूचना पट्टी, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा अन्य प्रकार की लेखन–सामग्री हिन्दी और अंग्रेज़ी में जारी किये जाने चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण बातें :

- ❖ नीति संबंधी सभी बोर्डों को अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में बनाना चाहिए।
- ❖ संगठन के सभी समारोहों के निमंत्रण–पत्रों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में बनाना चाहिए।
- ❖ सभी रबड़ की मोहरें अनिवार्यतः द्विभाषी होनी चाहिए।
- ❖ विज्ञापनों में हिन्दी का प्रयोग न्यूनतम ५० प्रतिशत होना ही चाहिए।
- ❖ सभी टिप्पणियों में हिन्दी का प्रयोग ३० प्रतिशत तक होना चाहिए।
- ❖ अधिकारियों / कर्मचारियों के ए.सी.आर. में उनके द्वारा हिंदी में किए गए प्रशंसनीय कार्य का उल्लेख किया जाना चाहिए।
- ❖ सभी कर्मचारी उपस्थिति पंजीकरण में हस्ताक्षर हिंदी में ही करें।

प्रगत संगणक विकास केन्द्र, मोहाली

प्रगत संगणक विकास केन्द्र सी–डैक (पूर्व इलेक्ट्रानिकी डिज़ाईन प्रौद्योगिकी केन्द्र) की स्थापना मई १९८९ में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई।

सी–डैक, मोहाली सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग का आई.एस.ओ. ९००१-९००२ प्रमाणित पहला केन्द्र है। यह केन्द्र दूरसंचार, नेटवर्किंग, बहुभाषी, मल्टीमीडिया, बायोमेडिकल, साइबर सिक्योरिटी तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण देने की क्षमता रखता है। इन सभी प्रशिक्षणों के पाठ्य–क्रम आई.टी. क्षेत्र की जरूरतों को मद्दे नज़र रखते हुए समय–समय पर विकसित किए जाते हैं। पिछले दो दशकों से यह केन्द्र मानव प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपनी विश्वस्तरीय छवि कायम रखी है। यह केन्द्र अब तक लगभग ११४४ पाठ्यक्रमों में लगभग ३२२८७ से ज़्यादा भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को आधुनिक प्रशिक्षण देकर उनका व्यवसायिक विकास कर चुका है।

सी–डैक मोहाली विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक सोफ्टवेयर उत्पाद बना चुका है, जिनमें स्वास्थ्य देखभाल के लिए संजीवनी और ई–संजीवनी, भारत सोफ्टवेयर सल्यूशन जिसे स्कूल, कॉलेज तथा अन्य संस्थानों की कुशल कार्यवाही के लिए, हनीनेट सोफ्टवेयर साईबर सुरक्षा के लिए, आर. एफ. डी. आई. आधारित प्रणाली विभिन्न विभागों के लिए और इसी तरह के अनेक सोफ्टवेयर प्रदान कर चुका है जो कि पंजाब सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों के लिए अत्यन्त लाभकारी साबित हो रहे हैं।

सी–डैक, मोहाली में मानव संसाधन के विकास के लिए आई.टी. क्षेत्र में जरूरत मंद सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं जिसमें स्मार्ट कक्षाएं, ऐनिमेशन और मल्टीमीडिया प्रयोगशाला, बहुभाषी प्रयोगशाला, साइबर सुरक्षा प्रयोगशाला, डिजिटल इलैक्ट्रोनिक प्रयोगशाला, प्रोटोटाईप विकास प्रयोगशाला तथा कई अन्य प्रयोगशालाएं भी आई.टी. की पूर्ण जरूरतों के आधार पर उपलब्ध हैं। केन्द्र के पुस्तकालय में आई.टी. सम्बन्धित ६००० से ज्यादा पुस्तकें और १८० से ज्यादा पत्रिकाएं देखी जा सकती हैं। १०० से ज्यादा व्यक्तियों के बैठने की क्षमता युक्त प्रेक्षागृह, आधुनिक सुविधाओं से युक्त और लड़के लड़कियों के लिए अलग–अलग छात्रावास जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ सी–डैक मोहाली ने अपना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर बनाए रखा है।

तकनीकी लेख

रेडियो आवृत्ति पहचान प्रौद्योगिकी

रेडियो आवृत्ति पहचान (आर०एफ०आई०डी०) प्रौद्योगिकी स्वचालित पहचान क्षेत्र की एक अग्रणी तकनीकी है। यह 'अद्वितीय पहचान संख्या' पर आधारित होती है। यह किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष की पहचान से सम्बंधित अनुप्रयोगों में प्रयोग होती है। इस तकनीकी के तीन मुख्य अवयव होते हैं;

१. 'सूचक पत्र' या 'अभिज्ञान पत्र'

२. अभिज्ञान पत्र पाठक या पृच्छक

३. अनुप्रयोग साफ्टवेयर

'सूचक पत्र' या 'अभिज्ञान पत्र' वस्तुतः एक सूक्ष्म स्मृति–कोष होता है जिसका प्रयोग एक 'अद्वितीय पहचान संख्या' के संचयन के लिए किया जाता है। यह अद्वितीय संख्या किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष की अद्वितीय पहचान निर्धारित करती है। सूचक पत्र में एक सूक्ष्म एंटिना तैयार किया जाता है जो स्मृति–कोष से जुड़ा होता है और पूरी संरचना एक 'मुलाकाती पत्र' के आकार की होती है और इसे किसी वस्तु विशेष के साथ चिपकाया जा सकता है जिससे वस्तु की पहचान निर्धारित होती है।

'अभिज्ञान पत्र पाठक' या पृच्छक ही वह मशीनरी है जिससे सूचक पत्र की पहचान संख्या पढ़ी जाती है। यदि कोई 'सूचक पत्र' पृच्छक के विद्युत–चुम्बकीय क्षेत्र में आता है तो सूचक पत्र के एंटिना में विद्युत–चुम्बकीय क्षेत्र का प्रेरण होता है और इस तरह सूचक पत्र को ऊर्जा की प्राप्ति होती है। इस क्षणिक ऊर्जा के मिलते ही सूचक पत्र अपने स्मृति–कोष में संचयित अद्वितीय पहचान संख्या को पृच्छक तक पहुंचाता है पृच्छक इस पहचान संख्या को कंप्यूटर तक पहुंचाता है जहाँ पर इसे संचयित किया जाता है।

इस तकनीकी के अनुप्रयोगों पर आधारित 'साफ्टवेयर' इस 'पहचान संख्या' को विभिन्न आयामों के साथ प्रयोग करके निर्धारित परिणाम प्राप्त करता है।

रेडियो आवृति पहचान प्रौद्योगिकी का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। उपस्थिति–प्रबन्धन, पुस्तकालय प्रबन्धन, वाहन पंजीकरण, वाहन कर प्रबन्धन और विभिन्न 'मार्गन अनुप्रयोगों' में इस तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है।

शैलेश सिंह
अभियन्ता

तकनीकी लेख

मल्टीमीडिया - एक रचनात्मक दृष्टिकोण

मल्टीमीडिया शब्द बॉब गोल्डस्टीन द्वारा Light works at Larson शो जो कि साऊथेम्प्टन में खुलने वाला था को बढ़ावा देने के लिए गढ़ा गया था। यह करीब १९६६ की बात है। चालीस वर्षों में इसे कई विभिन्न (अलग–अलग) अर्थों में लिया गया। १९७० के दशक में मल्टीमीडिया शब्द बहु– प्रोजेक्टर स्लाइड द्वारा प्रस्तुतियों के लिए इस्तेमाल होने लगा। १९९० में इसे वर्तमान अर्थ जो कि 'मल्टीमीडिया ग्राफिक, कला, ध्वनि, वीडियो का संयोजन है जो कम्प्यूटर द्वारा दिया गया। आपको मशहूर हॉलीवुड फ़िल्म गॉडजिला याद होगी जिसमें न्यूयार्क की सड़कों पर मुंह से आग उगलता गॉडजिला दिखाया गया है। यह मल्टीमीडिया टीम का चमत्कार है जो कल्पना को मूर्तरूप प्रदान करती है। मल्टीमीडिया में वेबसाइट डिजाइनिंग, एनिमेशन, स्पेशल इफेक्ट्स और डिजिटल वीडियो तैयार करना शामिल है। आज देश में यू.टी.वी., यशराज फिल्म्स, रिलायंस बिग इंटरटेनमैंट जैसे बड़े–बड़े प्रोडक्शन घरानों ने ड्रीम वर्क्स, वाल्ट डिजनी और पकिचर ऐनिमेशन जैसे प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर पहले ही इस सेक्टर को विस्तार देने की अपनी योजनाओं की घोषणा कर दी है।

मल्टीमीडिया शब्द का अर्थ एक से अधिक मीडिया, रेडियो, टी.वी. समाचार पत्र आदि सब संचार के साधन है। इसलिए मल्टीमीडिया एक से अधिक संचार के साधनों का उपयोग करना होता है इसमें पाठ–ध्वनि, ग्राफिक, स्थिर चित्र, कला, ऐनिमेशन का प्रयोग होता है। यह कम्प्यूटरीकृत गैजटों या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग कर इस्तेमाल में लाया जाता है। मल्टीमीडिया मोटे तौर पर रैखिक (लीनियर) और गैर रेखीय (नॉनलीनियर) श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। रैखिक मीडिया पर यूजर का कोई नियंत्रण नहीं होता और गैर रेखीय उपयोगकर्ता को अन्तर क्रियाशीलता प्रदान करता है।

इस तकनीक का जीवन के कई क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है, उनमें से रचनात्मक उद्योग सबसे महत्वपूर्ण है। अधिकांशतः मनोरंजन जगत में इसका उपयोग होता है। फिल्मों और एनिमेशन में स्पेशल इफेक्टस मल्टीमीडिया के अंतर्गत आता है।

सूत्रपात

मल्टीमीडिया शिक्षा सामग्री तैयार करने के लिए और कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण में सहायता के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। यह शिक्षा और मनोरंजन को जोड़ती है तथा प्रशिक्षण का कार्य करती है – मल्टीमीडिया।

पत्रकारिता मल्टीमीडिया को पूरी तरह से उपयोग में लाता है। पत्रकार संयुक्त मीडिया और प्रौद्योगिकी द्वारा जहां तहां बैठे–बैठे सूचना का संचार करने में सफल होते हैं। वाणिज्यिक क्षेत्र भी इसके इस्तेमाल से अछूते नहीं रहे। विज्ञापनों को दिलचस्प बनाने में मल्टीमीडिया का बहुत बड़ा हाथ है। मल्टीमीडिया का इस्तेमाल दवा की दुनिया से लेकर सॉफ्टवेयर अनुकरण, सैन्य प्रशिक्षण के लिए किया जाने लगा है। वही एनिमेशन मल्टीमीडिया परियोजना के लिए दृश्य प्रभाव जोड़ता है। दोनों मैक और विंडोज के लिए कई मल्टीमीडिया अनुप्रयोगों एनिमेशन प्रदान करते हैं। मनोरंजन मल्टीमीडिया एनिमेंशन पर शीर्षक, कार्टून शीर्षक और साथ ही प्रशिक्षण अनुप्रयोगों के लिए निर्भर है। मल्टीमीडिया परियोजना के लिए ऐनिमेशन दृश्य आंखों को लुभाने वाले चित्र तैयार करते हैं। वेबसाइटें भी इसी तरह दर्शकों तक एक पसंदीदा टी.वी. शो या शाम की खबर की तरह ही विशिष्ट सामग्री प्रदान करती है। इसमें जरूरत होती है एक अच्छे डिजाईनर की जो इसे लुभावने रंगों से मन भावन बनाए।

इंटरनेट एक मल्टीमीडिया संचार जगह है और इसको हम इसकी बेहतर बैंडविथ और तेजी से कनैक्शन के साथ अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग में ला सकते हैं। मल्टीमीडिया खेल और सिमुलेशन एक भौतिक वातावरण में विशेष प्रभावों के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। ऑनलाइन मल्टीमीडिया तेजी से वस्तु उन्मुख और डेटा पर आधारित होता जा रहा है। जानकारी को किस तरह जोड़ा गया और प्रस्तुत किया जाता है यह भी मल्टीमीडिया की शक्ति है। मल्टीमीडिया कुछ भी नहीं सिर्फ एक से अधिक मीडिया का उपयोग कर अधिक संचारित और समझदारी से जानकारी को प्रस्तुत करना है।

लुभावने ग्राफिक्स, एनिमेशन, वीडियो, ऑडियो के द्वारा २–डी और ३–डी एनीमेटेड फिल्मों का निर्माण हुआ है और हम इनके द्वारा दिये गये मनोरंजन से अछुते न रह सके है चाहे वह बाल कृष्ण हो या बाल हनुमान या डिजनी के कार्टून या एलीस इन वंडर लैंड हो।

ज्योति मेहरा
वरिष्ठ तकनीकी सहायक

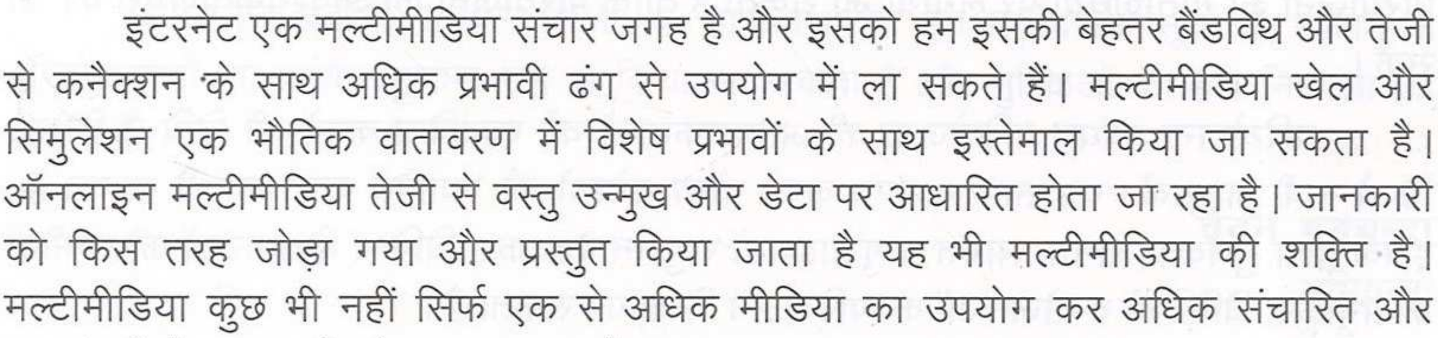

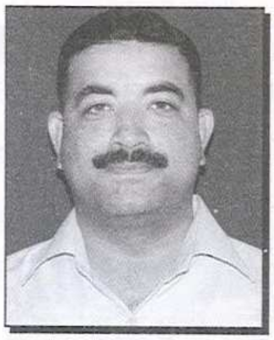

परियोजना प्रबन्धन

औद्योगिक विकास में परियोजना प्रबन्धन का विशेष महत्व होता है। संगठनों की कार्यक्षमता बढ़ाने में परियोजना प्रबन्धन का बहुत गहरा योगदान है। आज के व्यवसायिक युग में, जहां ग्राहक की संतुष्टि सर्वोपरि है और प्रतियोगता कुशल होना जरूरी है, वहां सक्षम परियोजना प्रबन्धन की आवश्यकता है। किसी भी परियोजना को सुघड़ ढंग से करने की कला परियोजना प्रबन्धन के माध्यम से ही मिलती है। परियोजनाएँ उन कार्यों को करने की सुव्यवस्थित विधि है, जो कि किसी भी संगठन के सामान्य परिचालन सीमा के भीतर नहीं किए जा सकते।

परियोजना प्रबन्धक एक कप्तान की तरह होता है, जो कि विभिन्न प्रकार के परियोजना प्रबंधन की तकनीकों, सामान्य प्रबंधन कौशल, संचार कुशलता, संगठन कौशल, बजट कौशल, समस्या सुलझाने के कौशल, बातचीत कौशल, नेतृत्व कौशल, मानव संसाधन कौशल आदि में निपुण हो। परियोजना प्रबंधन एक माध्यम है जिसके कारण ज्ञान, कौशल, उपकरण और तकनीकों को परियोजना की गतिविधियों पर लगाया जा सकता है ताकि परियोजना की आवश्यकताएं पूरी की जा सकें।

परियोजना प्रबंधन परियोजना की आवश्यकताओं को एकांकित करने की विधि है जिससे कि वे नापी जा सकें। यह साफ व प्राप्त करने योग्य उद्देश्यों को स्थापित करने का भी माध्यम है। इसके द्वारा गुणवत्ता, समय, लागत व गुंजाइश में संतुलन बैठा कर, विभिन्न हित्तधारकों की उम्मीदों के अनुकूल, विनिर्देशों व योजनाओं का परिचालन किया जा सकता है।

परियोजनाओं को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए और अतिरिक्त नियंत्रण के लिए चरणों में बांटा जाता है। इन सभी चरणों का इकट्ठा प्रारूप परियोजना जीवन चक्र के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक परियोजना चरण एक वास्तविक एवं निरीक्षित कार्य प्रणाली द्वारा चिन्हित होता है।

परियोजना प्रबंधन संस्थान (PMI) ने पांच प्रक्रिया समूहों व नौ ज्ञान क्षेत्रों का उल्लेख अपने परियोजना प्रबंधन के ढांचे में किया है। यह पांच प्रक्रिया समूह इस प्रकार से हैं :–

१. आरंभ : परियोजना को अभिकृत करना।

२. योजना : परियोजना को परिभाषित करना, उद्देश्यों व कारवाई का चयन

३. योजना को अमल में लाना : समन्वय के साथ योजना पर अमल

४. निगरानी और नियंत्रण : प्रगति की निगरानी, नियंत्रण और सुधारात्मक कार्रवाई।

५. समापन : औपचारिक समापन।

नौ ज्ञान क्षेत्र इस प्रकार से हैं :

१. परियोजना व्यापकता प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

२. परियोजना गुणवत्ता प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

३. परियोजना समय प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

४. परियोजना मूल्य प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

५. परियोजना मानव संसाधन प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

६. परियोजना संचार व्यवस्था प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

७. परियोजना विपत्ति प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

८. परियोजना क्रय प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

९. परियोजना एकीकरण प्रबंधन का ज्ञान क्षेत्र

उपरोक्त प्रक्रिया समूहों व ज्ञान क्षेत्रों के मेल से ४२ प्रक्रियाएं निर्धारित की गई हैं।

परियोजना प्रबंधन संस्थान (PMI) के द्वारा स्थापित इन मार्गदर्शक सूत्रों के माध्यम से परियोजनाओं का प्रबंधन सुचारू रूप से किया जा सकता है और मुश्किलों का हल निकाला जा सकता है।

चेतन मनचन्दा

अभियन्ता

अपनी मातृभाषा बंगला में लिखकर मैं बंगवंधु तो हो गया किंतु भारतवंधु मैं तभी हो सकूँगा जब भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिखूंगा।

– गुरुदेव रविन्द्र नाथ टेगौर

प्रशासन शब्दावली

Absentee Statement	अनुपस्थिति विवरण
Academic Qualification	शैक्षणिक योग्यता
Balance Sheet	तुलन पत्र
Bill of Exchange	विनिमय पत्र
Carry Forward	आगे ले जाना
Certificate	प्रमाण पत्र
Deduction	कटौती पत्र, घटाव
Deliver	देना, सौंपना
Earned Leave	अर्जित छुट्टी
Essential	अनिवार्य
Faithful	विश्वासपात्र
Financial Administration	वित्तीय प्रशासन
General Application	सामान्य प्रयोग
Gratuity	उपदान
Half Day Leave	आधे दिन की छुट्टी
Half Yearly	अर्द्धवार्षिक, छःमाही
Identity Card	पहचान पत्र
Incentive Scheme	प्रोत्साहन योजना
Joint Account	संयुक्त खाता
Jurisdiction	अधिकार क्षेत्र
Key note Address	आधार व्याख्यान
Key Map	मूल नक्शा
Law and Order	कानून और व्यवस्था
Liaison	भागी
Maintenance Grant	अनुरक्षण अनुदान
Managing Committee	प्रबंध समिति
Necessary Action	आवश्यक कार्रवाई
Neglect	उपेक्षा

सुषमा कौशल
कार्यालय सहायक

निबन्ध / लेख

प्रतिस्पर्धा की परिकाष्ठा

अफ्रीका के जंगलों में रहते थे एक शेर और एक हिरन। हर सुबह आँख खुलते ही, हिरन सोचता था आज उसे बहुत तेज दौड़ना होगा, शेर से भी तेज, अन्यथा वह शेर के मुंह का निवाला बन जायेगा। कुछ ऐसी ही सुबह शेर की भी होती थी वह भी यही सोचता था कि आज उसे बहुत तेज दौड़ना होगा, हिरन से भी तेज, अन्यथा उसे आज फिर भूखा रहना होगा।

यह है प्रतिस्पर्धा की परिकाष्ठा, यहां हम शेर हों या हिरन, प्रतिदिन हमें इस अनन्त दौड़ में शामिल होना ही पड़ता है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए यह दौड़ हमारे जीवन का हिस्सा बन चुकी है। यह दौड़ तो हमारे जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है और सारी उम्र चलती रहती है। जीवन की इस प्रतिस्पर्धा में जीवन के मूल्यों का हनन होता रहता है। हमसे हमारा बचपन छिन जाता है और वक्त से पहले हमारे चेहरे पर झुर्रियां आ जाती हैं फिर भी यह दौड़ खत्म नहीं होती है।

आज यह सोचने की आवश्यकता आ चुकी है कि यह दौड़ किस हद तक आवश्यक है इससे हम कितना बच सकते हैं और इस दौड़ का जीवन के अन्य आयामों से कैसे सामन्जस्य स्थापित करें। यह हमारे जीवन का एक कड़वा सच है कि आगे बढ़ने की होड़ में, हम तरह–तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं जो कहीं न कहीं उस तनाव की देन है जो इस प्रतिस्पर्धा का दुष्परिणाम है।

किसी भी प्रतिस्पर्धा का परिणाम जीवन और सिर्फ जीवन होना चाहिए, मृत्यु या मृत्यु तुल्य जीवन नहीं। अगर यह दौड़ हमें एक दुखद अन्त की तरफ ले जा रही है तो निश्चित ही इसकी विवेचना आवश्यक हो गयी है। एक लक्ष्मण रेखा खींचने की जरूरत है जो यह सुनिश्चित करे कि यह प्रतिस्पर्धा सार्थक बने।

प्रतिस्पर्धा, जीवन का सम्पूर्ण सत्य नहीं है। यह आवश्यक और अपरिहार्य तो है परन्तु जीवन के अन्य मूल्यों की कीमत पर नहीं।

शैलेश सिंह
अभियन्ता

निबन्ध / लेख

भ्रष्टाचार - कोई नई समस्या नहीं

कहते हैं कि आज के कलयुग, यानी मशीनी युग में भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। मेहनत करने वालों की जगह मशीनों ने ले ली है। हर एक कोई चाहता है कि मेरा काम जल्दी से जल्दी हो बेशक उसे उसके कारण कुछ प्रलोभन ही क्यों न देना पड़े। अतएव मानव द्वारा किया जाने वाला काम मशीने कर रही है और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

कहते हैं सबसे पहले सतयुग था उसके बाद त्रेता और फिर द्वापर तथा आजकल कलयुग है। त्रेता युग में लोगों में ईमानदारी, सच्चाई व अनुशासनता थी। लोग एक दूसरे से प्रेम करते थे फिर भी कहीं न कहीं भ्रष्टाचार था।

कहते हैं कि श्रीराम व रावण में महायुद्ध हुआ था व उस युद्ध के दौरान लक्ष्मण भ्राता घायल हो कर मूर्च्छित अवस्था में चले गए थे। उस समय वैदिक उपचार होते थे। लक्ष्मण मुर्च्छित होने पर भी यही हुआ, वैद्य राज बुलाए गए और सभी ने हाथ खड़े कर दिए। अंत में एक वैद्य राज जी ने कहा कि हिमालय पर्वत पर संजीवनी बूटी है अगर वह मिल जाए तो लक्ष्मण के प्राण बचाए जा सकते हैं। श्रीराम ने इस कार्य के लिए हनुमान को चुना और विनम्र प्रार्थना की कि वह ही यह कार्य कर सकते हैं।

श्री हनुमान जी ने अपनी बुद्धि, चतुराई व अपनी सभी शक्तियों का प्रयोग किया तथा हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी सहित सारी पहाड़ी ही ले आए तथा भ्राता लक्ष्मण का इलाज करा कर उन्हें जीवन दान दिलवाया। फिर श्री राम श्रीलंका से युद्ध जीतकर वापिस अयोध्या नगरी लौटे व अपने शासन की बागडोर सम्भाली।

कहते हैं कि श्रीराम ने एक दिन हनुमान जी से कहा कि आप जो कुछ भी मांगना चाहते हो मांग लो। मैं तुम्हें तुम्हारा पारितोषिक देना चाहता हूं। श्री हनुमान जी को किसी चीज की क्या आवश्यकता थी उन्होंने तो श्रीराम से अपने चरणों में जगह मांगी और श्रीराम जी ने कहा, तथास्तु!

कहते हैं कि श्री हनुमान जी ने जब श्री राम के शासन में संजीवनी लाने के लिए प्रयोग किए गए जहाज का टी.ए. बिल भरा था तो उस पर बहुत आपत्तियां लगी कि हनुमान जी सेवक होते हुए जहाज से यात्रा करने के पात्र ही नहीं थे और उन्होंने जाने से पहले हवाई सफर की अनुमति क्यों नहीं ली व कुछ अन्य प्रश्न भी किये गए। हनुमान जी ने सोचा त्रेता युग है और उन्होंने तो निस्वार्थ कार्य किया था, अब इस तरह के प्रश्न क्यों ? कहते हैं कि उन्होंने श्रीराम सचिवालय में जाकर बात

की और डीलिंग्ज को कहा कि वह कुछ सेवा पानी कर देंगे। इसलिए मेरा टी.ए. बिल पास कर दो। दोनों तरफ से सहमति बन गई। कहते हैं कि फिर क्या था Dealing सचिव ने केस को ही पलट कर रख दिया। नोटिंग के दौरान उन्होंने केस को इस तरीके से पेश किया कि कार्य अति आवश्यक था, लक्ष्मण की जान को खतरा था तथा इतनी दूर से संजीवनी बूटी लाना हवाई जहाज के अलावा सम्भव ही नहीं था इसलिए हनुमान जी को यात्रा भत्ता स्वीकृत कर दिया जाए।

अन्ततः सभी ने स्वीकृति दे दी और हनुमान जी को उनकी यात्रा भत्ता मिल गया। इसलिए ये सब कैसे हुआ सिर्फ भ्रष्टाचार की वजह से। देखिए, वास्तविक काम भी देश में नहीं होता लेकिन थोड़ा लालच देकर कुछ भी सम्भव है। यह तो एक कहानी है। सच्चाई तो यह है कि भ्रष्टाचार ने अपने पैर हर जगह पसार रखें हैं।

भ्रष्टाचार देश के ज्यादातर नागरिकों के जैसे खून में ही रम गया हो। ऐसा लगता है, क्योंकि कोई भी कार्य किसी भी स्तर पर ईमानदारी से नहीं होता। नतीजा यह है कि योग्य व्यक्ति का काम नहीं होता व भ्रष्टाचार के द्वारा गलत काम हो रहे हैं। हम सभी का कर्त्तव्य है कि इसे रोकने का प्रयास करें ताकि सभी देश वासियों का विकास हो व देश उन्नति करें।

मोहन लाल
वरिष्ठ वित्त अधिकारी

अब जबकि हिन्दी को राजभाषा की पदवी मिल गई है हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि राजभाषा की उन्नति बढ़ाएँ और उसकी सेवा करें, जिससे कि सारे भारत में यह बिना किसी संकोच या संदेह से स्वीकृत हो। हिन्दी को महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषायें अपना बहुमूल्य भाग ले सकें। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की ओर न किसी जाति की है। यह सारे भारत की भाषा है, और उसके लिय यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का मौका हासिल कर सकें।

– सरदार वल्लभभाई पटेल

निबन्ध / लेख

इंसान की पहचान

यह दुनिया कितनी बदल गई और हम किस दिशा में जा रहे हैं यह हर इंसान जानता है – विनाश। इस सब बदलाव के लिए कौन जिम्मेदार है – खुद इंसान। इंसान इतना बदल गया है कि उसने अपनी पहचान अपने अच्छे कर्मों से बनानी छोड़ दी है, उसकी पहचान उसके पास कितनी सम्पत्ति है से जानी जाती है। इस सम्पत्ति को जोड़ते–जोड़ते वह अपने सारे रिश्ते भूल जाता है, अपनी खुद की आत्मा से धोखा करता है, और सबसे बैर करता है। अगर सोचा जाए तो क्या यह सम्पत्ति इतनी महत्वपूर्ण है, जितनी इंसान ने बना रखी है। एक उदाहरण के तौर पर एक माँ का व्यवहार लेते हैं अपने बच्चों के प्रति समाज की आधुनिक माँ अपने बच्चों के साथ कम समय व्यतीत करना चाहती है और उसे जबरदस्ती उसका मन न होने के बावजूद इधर–उधर दौड़ाती रहती है, जा ड्राईंग सीख कर आ, टैनिस खेल कर आ इत्यादि। इस सब का नतीजा क्या हो जाता है और जो माँ या हमारे बुजुर्ग जो उन पनपते फूलों में जान डालते हैं (यानि अच्छे विचार) रह जाते हैं।

सम्पत्ति की दौड़ में इंसान यह भूल गया कि वस्तुएं इंसान के लिए थोड़ी देर के लिए सहारा बनती हैं, पर इंसान दूसरे इंसान के लिए कितना सहारा बन सकता है यह वह खुद भी नहीं जानता। इस सम्पत्ति के पीछे भागते–भागते, माँ कभी–कभी अपने रोते बिलखते बच्चे या बीमार बच्चे को घर किसी आया के पास छोड़ जाती है। पर क्या उस बच्चे को उस आया से प्यार मिल सकता है, उसके बालों में सहलाती हुई उंगलियों का अहसास मिल सकता है .... नहीं ! तो फिर इस इंसान का क्या फायदा। किसी को किसी के लिए समय नहीं है। दूसरों को दुःख कैसे पहुचे इंसान इसी सोच में रहता है।

बस, अगर हम यह प्रण करें कि घर हो या कार्यालय हमें अच्छे कर्म ही करने हैं, बुरा नहीं सोचना तो कितनी खुशहाल हो जाएगी सबकी जिन्दगियाँ। इंसान अपनी पहचान अपने अच्छे व्यवहार और कर्मों से बनाए, सब का आदर सम्मान करे, इंसानो के लिए वक्त निकाले, तो सोचो इतनी अच्छी दुनिया बनाएंगे हम रहने के लिए,

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान,
कितना बदल गया इंसान
सूरज ना बदला, चाँद ना बदला, ना बदला रे आसमान
कितना बदल गया इंसान। कितना बदल गया इंसान।

प्रीति अबरोल
प्रधान अभियंता

"सब को चाहिए भगवान"

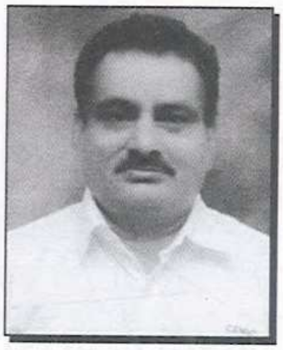

आज दुनिया के हर इन्सान को भगवान की कृपा चाहिए, ताकि उसे ऊंची शिक्षा, ऊंचा रुतबा, ऊंची पदवी व संसार का हर सुख, आराम, धन दौलत प्राप्त हो और इन सभी चीजों को हासिल करने के लिए सुबह से शाम तक दौड़ता रहता है। क्या इन सभी चीजों की प्राप्ति करके इन्सान को सच्चा सुख मिल पाता है? इसका उत्तर अक्सर 'नहीं' में ही मिलता है। आप ने सिकन्दर बादशाह की कहानी सुनी होगी कि किस तरह उसने अत्याचार करके, कई गांवों पर हमले करके उनको कब्जे में लेकर जीत हासिल की। जब उसका अन्त समय आया तो उसने वज़ीर से कहा कि जितना भी हमने धन इकट्ठा किया है उसको बाँध लो ताकि आगे जाकर काम आ सके तो वज़ीर ने कहा कि राजन आप धन की बात कर रहे हो लेकिन साथ में तो एक सुई भी नहीं जाती! तो राजा सिकन्दर ने क्रोधित होकर कहा कि यदि आपको सब मालूम था तो जब हम हमला कर गांवों के गांव तबाह कर रहे थे तो तब आप ने क्यों नहीं बताया कि साथ में कुछ भी नहीं जाता। सिकन्दर ने कहा कि जब मेरी अर्थी का जनाज़ा निकले तो मेरे दोनों हाथ अर्थी के बाहर निकाल देना ताकि लोगों को पता लगे कि "सिकन्दर जब रुकसत हुआ तो दोनों हाथ खाली थे।" आज रोम, ग्रीस में जितने भी सिकन्दर ने महल बनाये थे, सब खण्डर पड़े हैं। कहने का भाव यह है कि उपरोक्त विषय जिसमें लिखा है कि "सब इन्सानों को चाहिए भगवान" केवल सुख, आराम और धन दौलत पाने के लिए नहीं बल्कि प्रभु परमात्मा की प्राप्ति के लिए, सुख शांति के लिए, दूसरों के परोपकार के लिए और भगवान की रज़ा में रहने के लिए हो अन्यथा यह जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हो जाएगा।

आप देखते हैं कि गाय सूखा घास खाकर भी मीठा दूध देती है और आप चाहे सांप को जितना भी दूध पिला दो तो वह हमेशा ज़हर उगलता है। इसी प्रकार इन्सान को भी परमात्मा की रज़ा में रहकर गाय की भांति सहज में रहकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए ताकि इन्सानी जीवन में आने का जो मकसद है, उसे पूर्ण कर सके। और कबीर जी का यह कथन भी उस इन्सान के ऊपर लगता है, कि

"कबीर जब तुम आये जगत में
जग हंसा तुम रोए!
ऐसी करनी कर चलो
तुम हंसो जग रोए।"

दलजीत जौली

प्रशासनिक अधिकारी

आत्म विश्वास

इस लेख में अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर स्पष्ट किया है कि आत्म विश्वास सफलता की कुंजी है। लेख के अनुसार आत्म विश्वास की कमी से ही हम विरोधी को स्वयं से अधिक शक्तिशाली मान लेते हैं, जब कि हममें आत्म विश्वास हो तो विरोधी को आत्महीन कर उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। हमें अपनी क्षमता और सफलता पर अखंड विश्वास होना चाहिए। निराशावादियों और डरपोक लोगों से दूर रहना चाहिए। मन को सफलता, विजय, सौभाग्य के विचारों एवं भावनाओं से परिपूर्ण रखना चाहिए। सच बात यह है कि जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है तो हम अपनी हीनता से, कायरता से, बुरे संस्कार से, आत्म विश्वास की कमी से विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से शक्तिशाली मान लेते हैं। हममें आत्मविश्वास हो तो उससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं। उसकी आधी शक्ति अपने में ले सकते हैं। आत्मविश्वास का सबसे बडा दुश्मन है दुविधा क्योंकि दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती है। आदमी की शक्ति को बाँट देती है। बस वह आधा इधर और उधर, इस तरह खंडित हो जाता है। जिंदगी में सफल वही व्यक्ति नहीं होते जो खाइयों को ताकते झाँकते हैं। विजयमाला उनके गले में पड़ती है जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तोल कर छलाँग लगाते हैं।

"जो हड़बड़ा कर रह गया तो रह गया। इधर जिसने लगाई छलाँग वो खाई के पार था"।

दीदार सिंह
विद्युत कारीगर

भाषा मनुष्य की आन्तरिक चिंतन एवं समाज के लोगों के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सहज एवं सशक्त माध्यम है।

– डॉ० मनमोहन सिंह

कहानी

किस्मत

अमन अपने माता पिता जी की इकलौती सन्तान था, उसके पिता जी गरीब थे फिर भी उन्होंने मेहनत करके अपने बेटे को पढ़ाया। अमन ने भी खूब मेहनत करके अच्छे नम्बरों से बी.कॉम. की डिग्री प्राप्त की। उसने सोचा कि अब उसे कहीं अच्छी नौकरी प्राप्त हो जाए तो वह माता–पिता जी को सुख से रखेगा क्योंकि उन्होंने मेरे कारण बहुत कष्ट सहे।

जब अमन ने नौकरी की तलाश शुरू की तो उसे हर जगह निराशा ही हासिल हुई क्योंकि न तो उसके पास रिश्वत देने के लिए पैसा था न सिफारिश। आज के समय में नौकरी तो ऐसे ही प्राप्त होती है। अमन को लगता था कि एक बार उसे नौकरी मिल जाए तो वह अपनी मेहनत और ईमानदारी से सब का दिल जीत लेगा क्योंकि अमन की सोच यह थी कि इन्सान मेहनत से सब कुछ हासिल कर सकता है। किस्मत पर उसे यकीन नहीं था। वह किस्मत को नहीं मानता था उसे लगता था कि मेहनत से भी इन्सान समाज में अपनी जगह बना सकता है।

आखिर इतनी कोशिश के बाद उसे एक सरकारी दफ्तर में अस्थाई तौर पर नौकरी प्राप्त हो गई। वह बहुत खुश हुआ। उसके माता–पिता जी की भी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। लेकिन उसका वेतन बहुत कम था जबकि उसके साथ करने वाले कर्मचारियों का वेतन उससे कहीं ज्यादा था। फिर भी अमन ने सोचा कि कोई बात नहीं, अपनी मेहनत से इस दफ्तर में अपना स्थान जरूर बना लेगा। लेकिन उसे नहीं पता था कि इन्सान मेहनती हो या न हो, उसकी किस्मत या उसके पास अच्छी सिफारिश का होना बहुत जरूरी है।

अमन को इस दफ्तर में काम करते दो साल हो गए लेकिन उसके वेतन में कोई खास फर्क नहीं पड़ा जबकि वह इतनी मेहनत करता था। कई बार तो उसे छुट्टी वाले दिन भी ऑफिस आना पड़ता था। आखिर एक दिन उसके पिता जी ने एक साधारण परिवार की लड़की देख कर उसकी शादी कर दी। सोचा किसी के आने से अमन की जिन्दगी बदल जाएगी। शादी के बाद अमन की ज़िम्मेदारियां बढ़ गई, लेकिन वेतन कम होने के कारण वह अपनी ज़िम्मेदारियां पूरी नहीं कर पा रहा था। उसकी पत्नी भी उसके साथ लड़ती रहती थी क्योंकि वह उसकी कोई भी इच्छा पूरी नहीं कर पा रहा था। आखिर एक दिन उसकी पत्नी उसको छोड़ कर चली गई। मानसिक तौर पर अमन काफी परेशान रहने लगा क्योंकि उसकी सोच गलत साबित हुई। उसे लगता था कि मेहनत से सब कुछ हासिल किया जा सकता है, किस्मत कुछ नहीं होती।

आज वह यह सोच कर बहुत दुःखी हुआ कि न तो वह अपने माता–पिता को कोई सुख दे पाया जिन्होंने कितनी मेहनत करके उसको पढ़ाया और न अपनी पत्नी को कोई खुशी दे पाया, वह भी छोड़कर चली गई।

आखिर एक दिन दफ्तर से भी उसको निकाल दिया गया क्योंकि उसकी जगह किसी और को सिफारिश पर लिया गया। अमन पूरी तरह से टूट गया। उसके मन में जीने की चाह ही खत्म हो गई और एक दिन उसने खुदकुशी कर ली। उसके माता–पिता उसको मरते हुए देखते रहे क्योंकि वह उसका सही समय पर इलाज नहीं करा पाए। उसके पिता जी फिर से काम करने की सोचने लगे कि इस उम्र में क्या काम करे और आखिर किस्मत को क्या मंजूर है ?

निष्कर्ष : आज चाहे इन्सान को लगता है वह सब कुछ हासिल कर सकता है। जिनको विरासत में पैसा मिल जाता है, वे उसे अपनी किस्मत मानते हैं, लेकिन अमन जैसे गरीब लोग जो मेहनत ही कर सकते हैं वे किस्मत कहां से लाए। किसी ने सच ही कहा है :–

वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा,
न किसी को मिला है, और न मिलेगा।

बलबीर कौर
सहायक

यदि हम लोगों ने तन, मन, धन से प्रयास किया तो वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिन्दी।

– सुभाष चन्द्र बोस

स्थापना दिवस समारोह

हवन समारोह

शब्द कीर्तन समारोह्

पूर्व डी.जी. श्री आर एस खण्डपुर द्वारा
स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन

श्री सरवेश कौशल आई टी सचिव पंजाब
द्वारा टेकनीकृति प्रदर्शनी का उद्घाटन

स्थापना दिवस समारोह के दौरान आधुनिक
सूचना सुरक्षा तकनीकी कार्यशाला

विभिन्न

रेडियो आवृति पहचान प्रोद्योगिकर उत्पाद
का तकनीकी हस्तांतरण

स्कूल विधार्थियों के लिए सूचना सुरक्षा शिक्षा
एवं जागरूकता पर विशेष कार्यशाला

श्री जे. एस. भाटिया (कार्यकारी निदेशक) कार्यशाला
वी.औ.एस.एस (BOSS) कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए

दैनिक भास्कर संपादक द्वारा गृह पत्रिका
सूत्रपात के प्रथम अंक का विमोचन

अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी आई. टी. पार्क चंडीगढ़ में
अध्ययन दौरे पर

अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी ताजमहल में अध्ययन दौरे पर

गतिविधियां

चितकारा विश्व विद्यालय में उद्यमशील जागरूकता शिविर का आयोजन

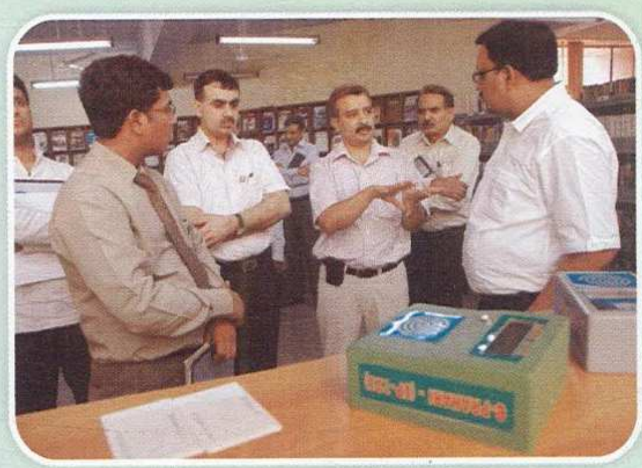

सी डैक का ऐलीटैक्स प्रदर्शनी में प्रस्तुति

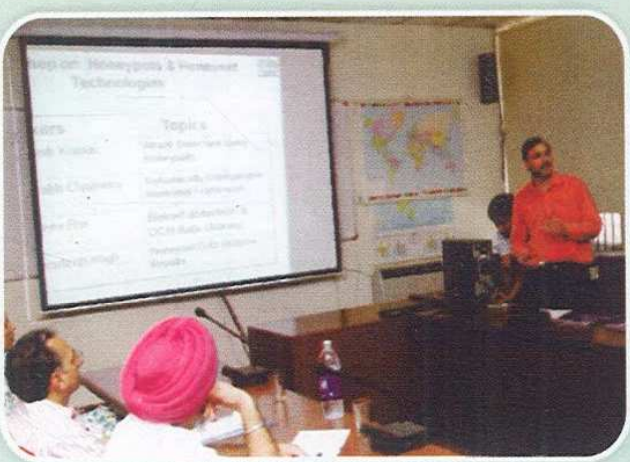

श्री राकेश सहगल, प्रधान तकनीकी अधिकारी सूचना सुरक्षा कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए

कार्यशाला ग्रीन हाउस का आयोजन

सी डैक का ऐलीटैक्स प्रदर्शनी में प्रस्तुति

सी डैक द्वारा तैयार सॉफ्टवेयर फूलकारी का विमोचन

विविध कार्यक्रम

डी जी रजत मौना सी डैक का स्वतन्त्रता दिवस पर पूना से सीधा प्रसारण

कार्यकारी निदेशक श्री जे. एस. भाटिया का स्वतन्त्रता दिवस पर सार्वजनिक अभिभाषण

श्री जे. एस. भाटिया का कार्यकारी निदेशक बनने पर सी डैक कैंपस में वृक्षारोपण

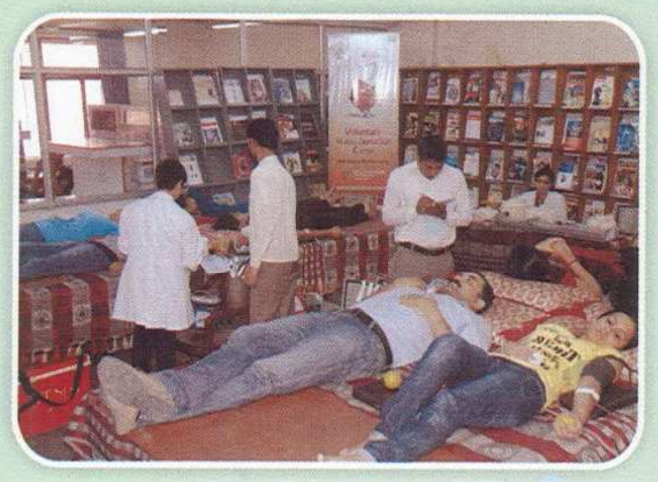

रक्त दान शिविर का आयोजन

दीपावली अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

कहानी

हर किसी का अपना महत्व

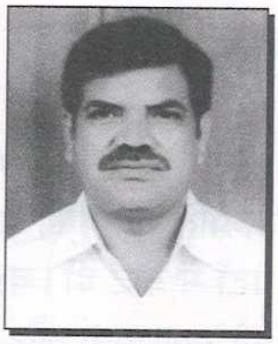

एक समय की बात है एक राजा जंगल में शिकार खेलने के बाद विश्राम के लिए पास में बनी एक कुटिया में गया, वहां पर विराजमान साधु ने राजा का स्वागत करते हुए पूछा : कहो राजन राज्य का क्या हाल है, राज–पाट कैसा चल रहा है ? राजा ने बड़ी आत्मीयता से जवाब दिया, महात्मा जी क्या बताऊँ राज्य को मैं अकेले ही इतनी मेहनत से चलाए जा रहा हूं। महात्मा ने हैरत अंगेज होकर कहा, "राजन ये कैसे सम्भव है" राज्य को तो सभी मिलकर चलाते हैं, जैसे मन्त्री, अधिकारी, कर्मचारी आदि आदि। साधु के उत्तर से जब राजा संतुष्ट नहीं हुआ तो साधु ने एक उदाहरण देते हुए राजा से पूछा राजन जिस घोड़े पर तुम आये हो वह घोड़ा कहां है ? राजा ने कहा, हे महात्मा क्यों मजाक करते हो ? आपके सामने ही तो मैं इस घोड़े पर आया हूं और यह आपके पास में ही खड़ा है। महात्मा ने कहा – राजन ऐसे नहीं हाथ लगाकर बताओ घोड़ा कहां है ? राजा ने बड़े प्यार से घोड़े के माथे पर हाथ फेरते हुए कहा यह है वह मेरा प्यारा घोड़ा जिस पर मैं सवार होकर आया हूं। साधु ने कहा – राजन यह तो माथा है। फिर राजा ने घोड़े की पीठ पर हाथ रखा और कहा, यह घोड़ा। साधु ने हंसते हुए कहा राजन यह तो पीठ है, घोड़ा कहां है ? राजा घोड़े के सभी अंगो की ओर इशारा करता गया और साधु जवाब देता गया कि ये तो फलां अंग है यह तो घोड़ा नहीं हुआ। घोड़ा कहां है ? राजा निरुत्तर था। साधु ने कहा, राजन जैसे इन सभी अंगो को मिलाकर घोड़ा बना है और इन सभी अंगों की वजह से ही यह चलायमान है। घोड़े के कई अंग ऐसे भी लगते है कि ये कोई कार्य नहीं करते परन्तु इसका हर एक अंग महत्वपूर्ण है चाहे वह सक्रिय हैं या निष्क्रिय। ऐसे ही आपका राज्य है, तुम्हारे राज्य को चलाने के लिए सभी कार्य करते हैं, चाहे वे काम करते हुए दिखाई दे या न दें। वे काम कम करे या ज्यादा, तुम अकेले राज्य को नहीं चला सकते। तुम मात्र एक अंग हो। हां, इतना जरूर हो कि तुम महत्वपूर्ण अंग हो। साधु ने अंत में राजा को समझाते हुए कहा राजन अगर ऐसा न होता और तुम अकेले ही कार्य कर रहे होते तो, तुम्हारा राज्य कभी का नष्ट हो गया होता, न राज्य होता न तुम क्योंकि तुम तो यहां मेरे पास हो। राजा का भ्रम टूटा और साधु को नत्मस्तक हो क्षमा याचना की।

यही नियम हमारे यहां लागू होता है। हम सब मिल–जुलकर ही सी–डैक हैं व सभी अपने–अपने कार्यक्षेत्र में मेहनत कर इसको इतनी ऊंचाईयों पर ले जा रहे हैं। कोई यह ना समझे कि "मैं ही कार्य करता हूँ" बल्कि यह कहे कि मैं भी कार्य करता हूं।

मदन सिंह

तकनीकी सहायक

कहानी

पिता का प्यार

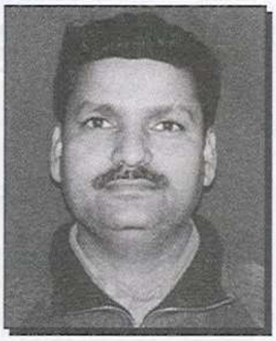

किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा पिताजी सम्पति में से जो भाग मेरा है वह मुझे दे दीजिए। पिता ने अपनी सम्पति दोनों बेटों में बाँट दी। बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब इकट्ठा करके दूर देश को चला गया और कुकर्म के काम में अपनी सारी सम्पति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका तो उस देश में भारी अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। फिर वह काम की तलाश में इधर–उधर भटकने लगा। किसी के यहां पर सूअर चारने की नौकरी करने लगा। और सूअरों के खाने में से ही उसे खाने को मिलता। वह बहुत दुःखी हुआ और रोने लगा उसने सोचा यहाँ से अच्छा खाना तो मेरे पिता के नौकर खाते हैं और साफ–सुथरा। उसने घर जाने का फैसला कर लिया और चल पड़ा। वह अभी घर से कुछ दूरी पर ही था कि उसके पिता ने उसे देख लिया। और दौड़ कर उसका पिता रोने लगा और नौकरो को आदेश दिया कि जल्दी से जल्दी मेरे पुत्र को नये कपड़े और नई जूती पहनाओ और पूरे गांव को दावत पर बुलाओ कि मेरा पुत्र चला गया था। अब लौट आया है। शाम के समय जब बड़ा भाई वापिस घर लौटा तो उसने देखा कि घर के बाहर बहुत लोग इकट्ठा हैं। उसने एक नौकर को बुला कर पूछा – क्या हुआ। नौकर ने बताया कि आपका छोटा भाई वापिस घर आ गया है। उसी की खुशियां मनाई जा रही हैं। यह सुन कर उसे गुस्सा आ गया और अपने पिता के पास जाकर बोला मुझे तो आपने कभी कुछ नहीं दिया। और वह अपनी सारी सम्पति उड़ा आया है तो खुशियां मना रहे हो। ''तुम्हारा भाई मर गया था अब जीवित हो गया है। खो गया था अब मिल गया है। सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। वह अब सुधर गया है।''

बच्चे चाहे जितनी बडी गलती कर दे। माता पिता हमेशा उसे माफ कर देते हैं।
मां–बाप से बढ़कर दुनिया में कोई प्यार नहीं।

रोशन लाल
गृह व्यवस्था कर्मचारी

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

अजन्मी बेटी की पुकार

रोकर कहे अजन्मी बेटी—मुझे न मारो माता।
मेरे साथ तुम्हारा क्या अब न कोई नाता ?
भूल हुई क्या मुझसे जननी ? जो तुम इतना रूठी
बाँध रखी मन से क्या दुविधा फूटी ?
माँ! मैं अंश तुम्हारी हूँ जीने दो मुझे
न मारो। न मारो मुझे गर्भ में बढ़ने दो
धड़क रहा दिल डर से मेरा भय से काँप रही हूँ।
अपनी लुटती मिटती रेखा नाप रही हूँ।
मुझे राह दे दो जीवन की तनिक दे दो सहारा।
प्यारी माँ मुझे मत मारो, मुझको भी जीने दो।
छाती से चिपक कर मुझको ममतामृत पीने दो।
तीन महीने बीते हैं मुझको गर्भ तुम्हारे आये
न बनूंगी बोझ तुम्हारा जग में नाम करूंगी
देखेगी सारी दुनिया ऐसा काम करूंगी
बेटों को सब दे देना मैं तुमसे कुछ न लूंगी
किरण कल्पना प्रतिभा सा भारत को गौरव दूंगी।
बुझे न मेरा जीवन दीपक होने दो उजियारा
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा
बेटों को बंटवारा देना मुझे न देना हिस्सा
किन्तु पिता मुझे मत मारो खत्म करो मत किस्सा
बेटे तब तक साथ रहेंगे जब तक हैं कुंवारे
जीवन भर जब चाहो मां आना बेटी के द्वारे।
साथ तुम्हारे बीस बरस रह दूर चली जाऊंगी।
प्यारे पिता! अजन्मी इस बेटी पर दया करो।
डूब रही है मेरी नैया सूझे नहीं किनारा
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा

रमेश तंवर
डाक परिचर

गीता सार

हे पार्थ ! (कर्मचारी)

१. इनक्रीमेंट अच्छा नहीं हुआ, बुरा हुआ, इनसेंटिव नहीं मिला, ये बुरा हुआ
वेतन में कटौती हो रही है बुरा हो रहा है...........

२. तुम पिछले इनसेंटिव न मिलने का पश्चाताप ना करो। तुम अगले इनसेंटिव की चिंता भी मत करो, बस अपने वेतन में संतुष्ट रहो।

३. तुम्हारी जेब से क्या गया, जो रोते हो ? जो आया था सब यहीं से आया था।

४. तुम जब नहीं थे, तब भी ये कंपनी चल रही थी, तुम जब नहीं होंगे, तब भी चलेगी
तुम कुछ भी लेकर यहां नहीं आए थे, जो अनुभव मिला, यहीं मिला जो भी काम किया
वह कंपनी के लिए किया, डिग्री लेकर आए थे, अनुभव लेकर जाओगे।

५. जो कंप्यूटर आज तुम्हारा है, वह कल किसी और का था
कल किसी और का होगा और परसों किसी और का होगा
तुम इसे अपना समझ कर क्यों मगन हो, क्यों खुश हो ....
यही खुशी तुम्हारी समस्त परेशानियों का मूल कारण है................
क्यों तुम व्यर्थ चिंता करते हो, किससे व्यर्थ डरते हो, कौन तुम्हें निकाल सकता है....... ?

६. सतत "नियम – परिवर्तन" कंपनी का नियम है.........
जिसे तुम "नियम–परिवर्तन" कहते हो वही तो चाल है ....
एक पल में तुम बैस्ट परफॉर्मर और हीरो नम्बर वन या सुपर स्टार हो
दूसरे पल में तुम वर्स्ट परफॉर्मर बन जाते हो और टारगेट अचीव नहीं कर पाते हो

७. ऐप्रेज़ल, इनसेंटिव ये सब अपने मन से हटा दो, अपने विचार से मिटा दो
फिर कंपनी तुम्हारी है और तुम कंपनी के न ये इन्क्रीमेंट वगैरह तुम्हारे लिए है
न तुम इसके लिये हो।

८. परंतु तुम्हारा जॉब सुरक्षित है, फिर तुम परेशान क्यों होते हो ....?
तुम अपने आप को कंपनी को अर्पित कर दो
मत करो इन्क्रीमेंट की चिंता, बस मन लगाकर अपना कर्म किये जाओ ....
यही सबसे बडा गोल्डन रूल है, जो इस गोल्डन रूल को जानता है, वह ही सुखी ....
वह इन रिव्यू, इनसेंटिव, ऐप्रेज़ल, रिटायरमेंट आदि के बंधन से सदा के लिए मुक्त हो जाता है,
तो तुम भी मुक्त होने का प्रयास करो और खुश रहो।

सुषमा कौशल
सहायक

बेटी की पुकार

माँ मैं इस काबिल नहीं कि सबको ये समझा सकूं
आह जो तेरे दिल में है, सबको मैं वो बता सकूं
मैं तेरा ही साया हूँ, मुझे इस दुनिया में आने दो,
लड़की सिर्फ पराया धन नहीं, एक बार तो ये समझाने दो,
२१वीं सदी के इस युग में, अभी भी ये सोच है,
लड़का वंश बढ़ाता है, और लड़की घर का बोझ है।
बार–बार, हर बार और कितनी बार ये अत्याचार किया जाएगा,
कल बनने वाली माँ को, आज कोख में ही खत्म किया जाएगा,
दुःख बांट लूंगी मैं सारे तेरे, जी लेने दो माँ मुझे,
मैं तुम्हारा नाम करूंगी, एक दिन तुम्हारी पहचान बनूंगी।
इस पीढ़ीवादी समाज का, तुम्हें आज सामना करना होगा,
मेरी ज़िंदगी या मौत में से किसी एक को चुनना होगा,
माँ मेरी है यही पुकार कि आज अपनी आत्मा की आवाज़ सुन लो,
इस समाज को भूलकर, तुम आज बस मुझे चुन लो।
आओ मिलकर हम इस कुरीति को मिटाएं,
एक नई क्रांति लाएं, एक नया समाज बनाएं।

पूजा दत्त
सहायक परियोजना सहयोगी

हिन्दी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषा रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

– डॉ० जाकिर हुसेन

हुस्न बेकरार

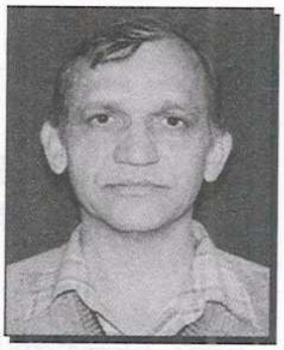

शमा पर चला मुकदमा परवाने के खून का
अदालत ने पूछा क्यूँ खून किया मासूम का।

शमा का ये बयान था परवाना बड़ा बेईमान था
मेरे आगे पीछे घूम रहा था, जवानी के जोश में झूम रहा था

जला कर खाक न करती तो क्या करती सरे महफिल मुझे चूम रहा था।
अदालत ने शमा को छोड़ दिया।

उलफत की राहों का मुख मोड़ दिया।
तभी से सरे जहां होता आया है।

हुस्न पर इश्क कुर्बान होता आया है।
सुनिए, सुनाता हूँ ऐसी ही दास्तां
कि हुस्न पर इश्क कैसे होता है कुरबां

इधर इक नौजवान पैदल चला आ रहा था
उधर इक नाजनीन गाड़ी पर चली आ रही थी।

ये रुक–रुक के होरन बजाने का आलम
ये झुक–झुक के जुल्फें उठाने का आलम

जवाँ ये सब देख चकरा गया था
वो नाजनीन की गाड़ी से टकरा गया था।

हर तरफ खामोशी सी छा गई थी
बिन बुलाये पुलिस भी आ गई थी

एक तरफ जवाँ की लाश पड़ी थी
दूसरी तरफ कातिल हसीना खड़ी थी

जमीं से जब जवां की लाश उठाई
खून से लिखी इबारत ये पाई

जवानी के नशे में लड़खड़ा गया था
मैं खुद इन की गाड़ी से टकरा गया था – 2

शशी कुमार गोस्वामी
मानव संसाधन कार्यकारी

साईं कृपा से वर

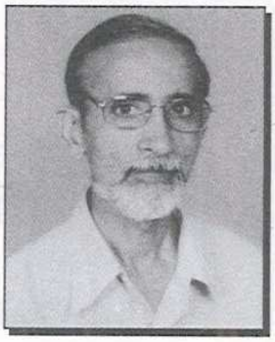

दोस्तों के दोस्त तो सब हुआ करते हैं
दुश्मनों से दोस्ती में क्या मज़ा है, ... कोई इनसे पूछे।
झूमती हवाओं में, उमड़ते बादलों में
तितलियों में, पेड़ों में, खुशी कैसे ढूंढना है, ... कोई इनसे पूछे।
समुद्र की लहर में, पहाड़ी नदी की झाग में
उछल–उछल कर चलने में, हँसने और हँसाने में क्या सुख है, ... कोई ....
जिंदगी टूटती नज़र आये, सारी आश छूट जाये।
रुके हुए पानी में, लहर कैसे उठाना है .... कोई इनसे पूछे
गिरतों को कंधा देने में, मिल बाँट खाने में
रोतों को हँसाने में, कौन सी साईं कृपा छुपी है, ... कोई इनसे

आर. एस बद्दू
परामर्शी

मन में घर

मैंने अपने मन की वादी में
एक छोटा सा घर बनाया है
जिसमें दीवार है न कोई दर
कोई छत है न कोई साया है
एक तनहाई का चिराग है
जो रात भर इस मकां में जलता है
सांस का सिलसिला तो मगर चलता है
रोशनी जलती है मगर सिर्फ मन में
बाकी तो अंधेरा छाया है
प्यार है बेपनाह पर सिर्फ इस मन में
जग में तो बंटवारा छाया है
रोशनी और प्यार के होते ये मन तनहा है
आज इन शब्दों के अर्थ को कौन समझ पाया है ....

ज्योति मेहरा
मल्टीमीडिया

यारी और शायरी

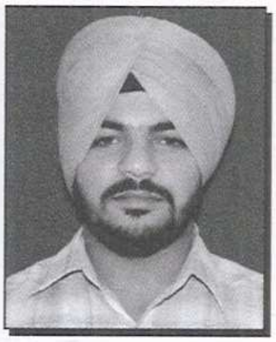

१. चाँद से जब मुलाकात होती है,
आम लोगों के बारे में कुछ बात होती है,
वो कहते हैं मेरे पास खूबसूरत सितारे हैं
हम कहते हैं उनसे भी अच्छे कुछ दोस्त हमारे हैं।

२. तनहा खुद को कभी होने मत देना,
आँखों को कभी रोने मत देना,
बहुत खास दोस्त हो आप हमारे
इस अहसास को कभी जुदा होने मत देना

३. चाँद ने चाँदनी को याद किया,
प्यार ने प्यार को याद किया,
पर हमारे पास ना "प्यार" है ना "चाँद"
इस लिए हमने अपने चाँद से प्यारे "दोस्त" को याद किया।

४. दिल जब टूटता है, तो आवाज़ नहीं आती,
हर किसी को मोहब्वत रास नहीं आती,
यह तो अपने–अपने नसीब की बात है,
कोई भूलता ही नहीं और किसी को याद ही नहीं आती,

५. जिन्दगी में मौत से डरता कौन है
प्यार हो जाता है, करता कौन है,
जान भी कुरबान है आप पर और
आप कहते हो हमारी फिकर करता कौन है।

६. अधूरा है आसमां सितारों के बिना,
अधूरा है समुद्र किनारों के बिना,
अधूरी है फिज़ा बहारों के बिना और
अधूरी है ये जिन्दगी आप जैसे यारों के बिना,

७. किसी की यादों ने पागल बना रखा है,
कहीं मर ना जाऊं कफन सिला रखा है,
जलाने से पहले "दिल" निकाल लेना यारो,
कहीं वो ना जल जाये जिसे दिल में बसा रखा है।

बलजीत सिंह
अटेंडेंट

हास्य-व्यंग्य

नसीहत

कर्जा देता मित्र को, वो मूर्ख कहलाये
महामूर्ख वो यार है, जो पैसे लौटाये।

बिना जुर्म के पिटेगा, समझाया था तोये
पंगा लेकर पुलिस से, साबित बचा न कोये।

गुरु पुलिस दोऊ खड़ें, काके लागूं पाय
तभी पुलिस ने गुरु के, पांव दिए तुड़वाये,

पूर्ण सफलता के लिये, दो चीजें रख याद
मंत्री की चमचागिरी, पुलिस का आशीर्वाद।

नेता को कहता गधा, शरम न तुझको आये
कहीं गधा इस बात का, बुरा मान न जाये

बुरे समय को देख कर, गंजे तू क्यों रोये
किसी भी हालत में तेरा, बाल न बांका होये।

वोट बिके अब नोट में, नेता बिके बाजार
सरक सरक कर चल रही, दिल्ली की सरकार

पीकर गाली दीजिए, जिससे होवे बैर
नशा उतरने जब लगे, छू लो उसके पैर।

आम आदमी के लिये, नहीं रहा अब आम
महंगाई में देखिये, चना हुआ बादाम।

ऐसी वाणी बोलिये, सबसे झगड़ा होये।
उससे झगड़ा मत करो, जो तुमसे तगड़ा होये।

रीता कुलावी
सहायक

हास्य-व्यंग्य

राजू और पापा

एक दिन राजू के पापा एक रोबोट लेकर आए, वह रोबोट झूठ पकड़ सकता था और झूठ बोलने वाले की गाल पर खींच कर चांटा मार देता था।

आज राजू स्कूल से घर देर से आया था .... पापा ने पूछा– "घर लौटने में देर क्यों हो गई ?" आज हमारी अतिरिक्त क्लास थी राजू ने जवाब दिया रोबोट अचानक अपनी जगह से उछला और राजू की गाल पर एक जोरदार चांटा मार दिया।

पापा हंसकर बोले, 'ये रोबोट हर झूठ को पकड़ सकता है अब सच क्या है, यह बताओ ..... कहां गए थे ?

"फिल्म देखने" राजू ने गाल सहलाते हुए जवाब दिया।

"कौन सी फिल्म" पापा ने कड़क कर पूछा।

"जय हनुमान"

चटाक ! .... अभी राजू की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसके गाल पर रोबोट ने एक और जोर का चांटा मारा।

"कौन सी फिल्म" पापा ने फिर पूछा !

"कातिल जवानी"

पापा गुस्से से बोले, "शर्म आनी चाहिए तुम्हें, जब मैं तुम्हारे जितना था तब ऐसी हरकत नही किया करता था।"

चटाक!........ रोबोट ने एक चाटा मारा इस बार पापा के गाल पर!

यह सुनते ही मम्मी रसोई में से आते हुए बोली, "आखिर तुम्हारा ही बेटा है ना, झूठ तो बोलेगा ही।" अब मम्मी की बारी थी .... चटाक।

कुलभूषण वर्मा
कनिष्ठ सहायक

हास्य-व्यंग्य

ऐसी हमारी लाइफ हो

ऐसी हमारी लाइफ हो, न बॉस हो, न वाइफ हो
सुबह–शाम चेहरा हमारा ब्राइट हो – ऐसी हमारी लाइफ हो

डिनर के टाइम कैंडल लाइट हो
ह्विस्की के साथ चिकन फ्राइड हो
हर शाम हम टाइट हों – ऐसी हमारी लाइफ हो।

डेल्ही, नागपुर, गोवा कभी भी जाये
टेंशन की गुंजाईश न हो – ऐसी हमारी लाइफ हो।

ब्यूटीफुल लड़की पटायी हो, फ्रान्ट सीट पर बिठाई हो
गड्डी शिमला रोड पर पायी हो – ऐसी हमारी लाइफ हो।

हर जवान की यही फरमाईस हो
कुदरत की भी अजमाईस हो
उपर वाले के साफ्टवेयर में भी बग की गुंजाइश हो
ऐ काश खुदा से ऐसी किस्मत पाई हो – ऐसी हमारी लाइफ हो।

" ये कविता पढ़ने के बाद लोग कहें 'सिंगला तुम राइट हो' "
ऐसी हमारी लाइफ हो।

रविन्दर सिंगला, वरिष्ठ तकनीकी सहायक

मंहगाई की दाल

दाल गलना एक मुहावरा है। यानि किसी भी काम का होना। और आजकल जिस तरह मंहगाई बढ़ रही है उसे देखकर कहना पड़ता है कि मंहगाई की दाल खूब गल रही है। दालों के दामों का तो पूछो ना। अब अरहर की दाल के दाम ही ले लो आसमान छू रहे हैं। यही दाल है जो भारतीय परिवारों में रोज खाई जाती है। दाल अरहर की है पर इसे बाँटने में सरकार की जो खिचड़ी बन रही है, वो बीरबल की खिचड़ी की याद दिला रही है दाल ऐसा शेयर बन चुकी है जिसकी कीमत गिरती ही नहीं है और काबू में नहीं आ रही है। हाल यह है कि कीमतें बढ़ने की बजाए तेजी से सीढ़ियां चढ़ रही है और वो भी आम आदमी की जेब दर जेब, आँख दर आँख और कंधा दर कंधा मिलाकर बिल्कुल अंधा करती हुई।

नवरूप कौर, परियोजना सहयोगी

कुछ आपके लिए

हाथ का साथ

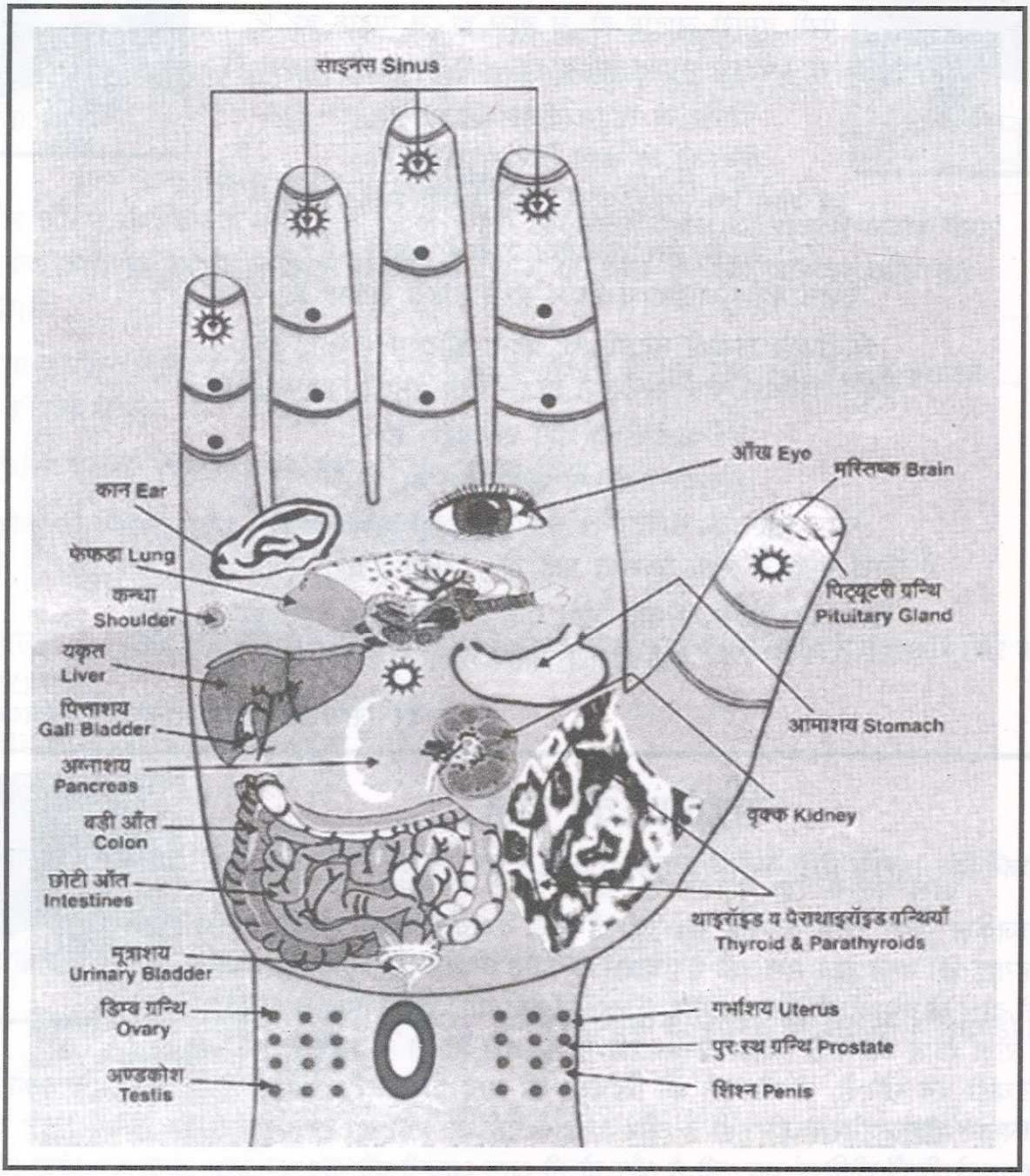

रोचक गणित

(क) अद्भुत संख्या ३७

यदि हम कोई ३ अंकों की संख्या लें और इन्हीं तीन अंकों से बनने वाली सभी संख्याओं को जोड़ें तो वह जोड़ ३७ से पूरा–पूरा विभाजित हो जाएगा।

उदाहरण – १	उदाहरण – २
२ ३ ४	३ ६ ७
२ ४ ३	३ ७ ६
३ २ ४	६ ३ ७
३ ४ २	६ ७ ३
४ २ ३	७ ३ ६
४ ३ २	७ ६ ३
१९९८ = ५४ x ३७	३५५२ = ९६ x ३७

(ख) अद्भुत संख्या ६१७४

गणितज्ञ डी.आर. केपरेकर ने १९४९ में पाया कि यदि किसी चार अंकों की संख्या (जिस में सभी चार अंक समान न हो) के चार अंक से बनने वाली लघुतम संख्या को उन्हीं चार अंकों से बनने वाली अधिकतम संख्या से घटाया जाए तो प्राप्त उत्तर को बार–बार उपरोक्त प्रक्रिया से दोहराने पर अन्ततः उत्तर ६१७४ प्राप्त होगा।

उदाहरण : मान लो संख्या है : ६०४०

अधिकतम संख्या	–	लघुतम संख्या	=	उत्तर
६ ४ ० ०	–	० ० ४ ६	=	६ ३ ५ ४
६ ५ ४ ३	–	३ ४ ५ ६	=	३ ० ८ ७
८ ७ ३ ०	–	० ३ ७ ८	=	८ ३ ५ २
८ ५ ३ २	–	२ ३ ५ ८	=	६ १ ७ ४
७ ६ ४ १	–	१ ४ ६ ७	=	६ १ ७ ४

यह प्रक्रिया अधिकतम ७ बार दोहराने से अद्भुत संख्या प्राप्त हो जाती है।

(ग) अंक १ से बनने वाली संख्याओं के गुणनखण्ड :–

१	=	१
११	=	११
१ ११	=	३ x ३७
११ ११	=	११ x १०१
१ ११ ११	=	४१ x २७१
११ ११ ११	=	३ x ७ x ११ x १३ x ३७
१ ११ ११ ११	=	२३६ x ४६४६
११ ११ ११ ११	=	११ x ७३ x १०१ x १३७
१ ११ ११ ११ ११	=	३ x ३ x ३७ x ३३३६६७
११ ११ ११ ११ ११	=	११ x ४१ x २७१ x ६०६१

जरनैल सिंह
परियोजना प्रबन्धक

सी–डैक राजभाषा कार्यान्वियन समिति

१.	श्री जे.एस. भाटिया	कार्यकारी निदेशक	अध्यक्ष
२.	श्रीमती सुनीत खेतरपाल	प्रधान तकनीकी अधिकारी	सदस्य
३.	श्री मोहन लाल	वरिष्ठ वित्त अधिकारी	सदस्य
४.	श्री शशि कुमार गोस्वामी	मानव संसाधन कार्यकारी	सदस्य
५.	श्रीमती अनु आहुजा	सहायक पुस्तकालय	सदस्य
६.	श्री शैलेश सिंह	अभियंता	सदस्य
७.	श्री राज कुमार	सहायक	सदस्य
८.	श्री मदन सिंह	तकनीकी सहायक	सदस्य
६.	श्री हरपिंदर सिंह	सहायक	सदस्य
१०.	श्री दीपक राणा	जन संपर्क अधिकारी	सदस्य सचिव

कुछ आपके लिए

बागवानी

मुझे बागवानी के विषय में पूरा अनुभव है। सबसे पहले बगीचे को हरा–भरा रखना चाहिए। उसके बाद छोटी–छोटी क्यारियाँ बनाकर अच्छी वैरायटी के फूलों का बीज डाल कर पौध तैयार करना चाहिए। पौध तैयार होने पर कुछ दूरी पर फूल लगाने चाहिए।

जैसे डबल गेंदा–गेंदी, पिन्नी, डेलिया फुलाकिस, डेजी, सालबिया, आत्नी हस पिन्जी, बरबीना, गुलदउद्दी, डाग फलावर, चाँदी रप इत्यादि रंग–बिरंगे फूल लगाने चाहिए।

जिनके घर में जगह नहीं होती है उन्हें गमले में इन डोर प्लांट लगाना चाहिए जैसे मन गोनिया, डरसिना, तुलसी, फिलाडडन मोर पंखी, रब्बर प्लांट, मनी प्लांट, कैकट्स, एस्फरा कश, गुल चीनिया। जिनके घर में जगह होती है उनकी अच्छी तरह घर की सजावट करनी चाहिए रिक्का पाम, रोयल पाम, कंघी पाम, फैक्स, पण्डा बोतल पाम, बोतल ब्रुश गोल्डन, चमेली, चम्पा। घर के पीछे यदि जगह हो तो अच्छी–अच्छी सब्जियाँ लगानी चाहिए।

जैसे पालक, गोभी, बैंगन, हरी मिर्च, शलगम, मूली फलदार पेड़ लगाना चाहिए जैसे नींबू, आड़ू, अनार, नाशपाती, पपीता, अमरूद, इत्यादि फल लगा देना चाहिए। कार्यालय में छायादार पेड़ लगाना चाहिए। जैसे गुलमोहर, कासिया, आंवला, तार अलीस टोनिया, कनैर, अर्जुन, बहेड़ा, कचनार, नीम का पेड़ छाया के लिये भी ठीक होते है। सेहत के लिए भी ठीक होता है।

कार्यालय में साफ सुथरा रखना चाहिए। घास को भी हरा भरा रखना चाहिए। शोदार पेड़ लगाना चाहिए। अच्छे–अच्छे फूल लगाना चाहिए।

जैसे गुलाब, हैवी कश, बोगन बेल करन डोला, लाजिस टोनिया इत्यादि अनेक प्रकार के फूल लगाना चाहिए और अपने घर एवं कार्यालय को हरा–भरा बनाना चाहिए।

राम करन यादव
बागवानी नरिक्षक

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

– महात्मा गांधी

कुछ आपके लिए

प्राथमिक चिकित्सा - एक जरूरत

ज़िन्दगी और मौत में केवल एक पल का फासला होता है। अकसर मरीज़ समय रहते डॉक्टरी इलाज न मिलने पर अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो बैठता है। विदेश में प्राथमिक चिकित्सा स्कूली छात्रों के पाठ्यक्रम में शामिल होता है। भारत में स्काउट्स, गाइडज़ एवं एन.सी.सी. कैडेटों को प्राथमिक चिकित्सा में प्रशिक्षण दिया जाता है।

यदि यह प्रशिक्षण सभी छात्रों के लिए अनिवार्य कर दिया जाए तो समय रहते कई ज़िन्दगीयों को बचाया जा सकता है। हाल ही में एक नीजी ज़िन्दगी में हुई घटना ने मुझे प्राथमिक चिकित्सा की महत्वता के बारे सब को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया।

तेज़ रफ्तार से चलते दिनचर्या में हम अपने परिवार के सदस्यों के लिए उपयुक्त समय नहीं निकाल पाते जिसके चलते हम अकसर उनकी सेहत में धीरे–धीरे होते बदलाव को समझ नहीं पाते। मुश्किल से जो ५-६ घण्टे हम घर पर बिताते हैं, वह ज़्यादातर टेलीविज़न के सामने गुज़रते हैं। बूढ़े माँ–बाप का ठीक ढंग से हाल–चाल पूछने या उनकी दवा–दारू का ध्यान रखने की फुरसत ही नहीं होती। ऐसे में अगर उन्हें कोई तकलीफ हो जाए तो हम उसका सही उपचार भी नहीं सोच पाते।

इसलिए ज़रूरी है कि हम अपने अपनों के लिए समय निकालें ताकि उनकी ज़िन्दगी में होते उतार–चढ़ाव को जल्द समझ पायें और उनके स्वास्थ्य सम्बन्धित उचित प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी रख पायें। प्राथमिक चिकित्सा के लिए सबसे पहले ज़रूरी है कि हम रोग–लक्षण पहचानें, यह जाने कि किन हालातों में हमें क्या करना चाहिए। "तैयारी" प्राथमिक चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। अपने घर, कार, या कार्यालय में बुनियादी आपातकालीन चिकित्सा किट होना ज़रूरी है। दिल का दौरा, स्ट्रोक या गर्मी से होने वाले स्ट्रोक अधिक महत्वपूर्ण आपात स्थितियों के उदाहरण हैं। इन में बेहतर यही है कि मरीज़ को तुरन्त डॉक्टरी इलाज मिले। इस बीच अगर आप प्राथमिक चिकित्सा के लिए प्रशिक्षित हैं तो उन कीमती पलों में आप मरीज़ को मौत के मुंह से बचा सकते हैं।

दुर्घटना कहीं भी और कभी भी हो, उसके लिए पहली प्रतिक्रिया सबसे महत्वपूर्ण होती है। सही प्रतिक्रिया जल्दी में की गई गलती से बेहतर होती है।

प्राथमिक चिकित्सा की "ए–बी–सी"

भारत में प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण अक्सर रेड क्रॉस और सेंट जॉन एम्बुलेंस के माध्यम से उपलब्ध है। सेंट जॉन एम्बुलेंस का मानना है कि हर किसी को कम से कम बनियादी प्राथमिक चिकित्सा तकनीक सीखना चाहिए।

प्राथमिक चिकित्सा की "ए–बी–सी" जानना आवश्यक है

"ए–बी–सी" का मतलब है – Airway (हवा की नली जो फेफडों तक जाती है), Breathing (श्वास), Blood (रक्त स्त्राव), Brain (मस्तिष्क), और Bone (हड्‌डी) – इनका इसी क्रम में ध्यान दें।

प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षित व्यक्ति सही ढंग से स्थिति को संभाल कर बहुत हद तक एक डॉक्टर का काम आसान कर देता है। भले ही आप अप्रशिक्षित हों, एक आपातकलीन स्थिति में आप कुछ सरल उपायों से मरीज़ की मदद कर सकते हैं –

१. मान लो रसोई में काम करते हुए चाकू की तीखी नोक से हाथ में गहरा घाव हो जाए तो पहले उस घाव को साफ करें, हाथ को सिर की ओर ऊपर कर, खून के बहाव को रोकने की कोशिश करें। अगर खून ज्यादा निकल रहा है तो घाव से पहले बाजू पर जोर से दबाव डालें या कपड़े से बाँध दें और डॉक्टर के पास ले जायें।

२. गर्मीयों में हीट स्ट्रोक, यानि तेज़ धूप या गर्मी के कारण होने वाली बेहोशी, बुखार या थकावट, आदि के कई शिकार होते हैं। हीट स्ट्रोक से दिल का दौरा पड़ने या अचानक मौत भी हो सकती है। इसलिए हीट स्ट्रोक से पीड़ित व्यक्ति के शरीर का तापमान तुरन्त कम किया जाना चाहिए। सबसे पहले सुनिश्चित कर लें कि साँस की नली खुली है और उस व्यक्ति के आस–पास भीड़ न हो। फिर उसको एक शांत और छायादार क्षेत्र में ले जायें और उसके तंग कपड़ों को ढ़ीला करें। पीड़ित के सिर, हाथ–पैर और कमर पर गीला तौलिया लपेटें। हो सके तो पीने के पानी में नमक और चीनी मिलाकर पिलायें।

३. रसोई में काम करते वक्त अकसर चहरे या हाथों पर गर्म तेल या बर्तन लग जाते हैं। नल का पानी डालने पर भी कई बार छाले बन जाते हैं। अगर घाव बड़ा है तो उस पर कुछ न डालें और न ही किसी कपड़े से ढ़कें। धूल–मिट्टी से बचाते हुए तुरन्त डॉक्टरी सहायता लें। यदि केवल त्वचा की उपरी सतह पर जला है तो तुरन्त पानी डाल कर उस पर गीले नमक का लेप लगाएं। इससे छाले नहीं बनेंगे और जलन से भी जल्द राहत मिलेगी।

याद रहे प्राथमिक चिकित्सा केवल डॉक्टरी इलाज से पहले की कारवाई है। यह नहीं कि इसके बाद डॉक्टर की ज़रूरत नहीं। दुर्घटना के पश्चात पहले कुछ क्षण पीड़ित के लिए ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलते हुए पल होते हैं। डॉक्टर के आने से पहले अगर उसको प्राथमिक चिकित्सा मिल जाए तो खतरा कम हो सकता है।

प्राथमिक चिकित्सा की महत्वता की ओर यह केवल एक झलक थी। उम्मीद करते हैं कि पाठक इस से प्रेरित हो कर प्राथमिक चिकित्सा में प्रशिक्षण लेंगे ताकि ज़रूरत पड़ने पर वह दूसरों की सही तरह से मदद कर सकें।

सुनीत खेतरपाल
प्रधान तकनीकी अधिकारी

कुछ आपके लिए

उद्यमी प्रेरित व्यक्तित्व - आज की जरूरत

आज के सूचना प्रौद्योगिकी तथा प्रतिस्पर्धा युग में अपने व्यवसाय को सफलता पूर्वक चलाने के लिए उद्यमी प्रेरित होना जरूरी है। एक उद्यमी प्रेरित व्यक्ति वही होता है, जो अपने आन्तरिक संसाधन पर विष्वास रखता है। जैसे कि आत्म विष्वास, पहल कदमी, दृढ संकल्प, आत्मबल और दूरदर्षिता। ज्यादातर लोगों का मानना है कि भगवान ने हर एक व्यक्ति को अलग–अलग किस्मत, जीवन और वातावरण दिया है। लेकिन भगवान ने एक वस्तु सभी व्यक्तियों को एक समान दी है और वह है समय जैसे कि ३६५ दिन और २४ घण्टे। इस वस्तु समय का कैसे, कब और कहां सही उपयोग कर समय रूपी अवसर का लाभ उठाना है, यह उद्यमी प्रेरित व्यक्ति की पहचान है **और एक उद्यमी प्रेरित व्यक्ति के लिए आकाश ही उसकी सीमा होती है।**

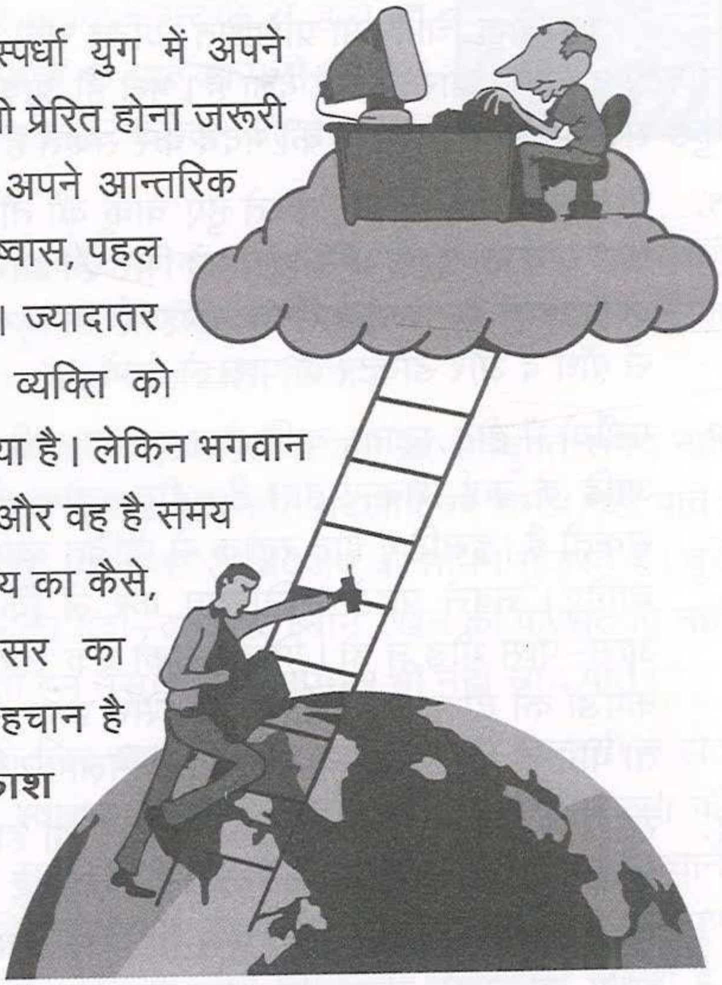

राष्ट्र भाषा हिन्दी का विकास @ सूत्रपात

उद्यमी तथ्य

- सूचना प्रौद्योगिकी तथा प्रतिस्पर्धा के वातावरण का लगातार अध्ययन आपके व्यवसायिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- कोई भी कार्य पहली बार और हर बार आत्म विश्वास के साथ करना चाहिए।
- आपकी व्यवसायिक सेवाओं की गुणवता का न्यायाधीश आपका ग्राहक है।
- कोई भी असफलता पुनः सीखने का एक और अवसर देती है।
- किसी भी उपलब्धि और कोई भी असफलता पर अपनी खुशी और अपनी निराशा की सीमा ६६% से ज्यादा नहीं महसूस करनी चाहिए।
- कभी भी अपने आप को शत–प्रतिशत प्रशिक्षित और ज्ञानवान् नहीं समझना चाहिए। ऐसा सोचने से आपके आगे व्यवसायिक विकास और उन्नति पर विराम लग सकता है।
- व्यवसायिक सहायता, जरूरत पड़ने पर ही लेनी चाहिये।
- यदि आप भाग सकने के योग्य और सक्षम है तो चलने को नज़र अन्दाज़ ही करना चाहिये।
- हजारों मील की लम्बी यात्रा केवल एक मात्र पहले कदम से आरम्भ हो जाती है।
- आप अपने आत्म विश्वास, दृढ़ संकल्प, दूरदर्शिता, कौशल तथा व्यवसायिक दृष्टिकोण से अपने स्वप्न और काल्पनिक विचारों को वास्तविकता में बदल सकते हैं।

एक भाषा के बिना भारत की एकता नहीं हो सकती है, और वह भाषा है – हिन्दी

– **केशवचंद सैन**

उद्यमी प्रेरित व्यक्ति अलग होते हैं

हमेशा...

- हर उत्तर का एक हिस्सा होता है।
- एक परियोजना और कार्यक्रम का उतरदायी होता है।
- अपने आप पर भरोसा करना है।
- अपनी असफलता के लिए अपने आप को दोषी मानता है।
- आप ठीक हैं, और मैं भी ठीक हूँ।
- अपने दिमाग और तकनीकी कौशल से अनुसंधान और विकास करता है।

ज्यादातर...

- एक समस्या का एक हिस्सा होता है।
- इससे दूर भागने का बहाना ढूंढता है।
- दूसरों पर ज्यादा भरोसा करता है।
- अपनी हर असफलता के लिए दूसरों को ही दोषी मानता है।
- मैं ठीक हुँ, परन्तु आप गल्त हैं।
- केवल काटने और चिपकाने की विधि पर ही विश्वास रखता है।

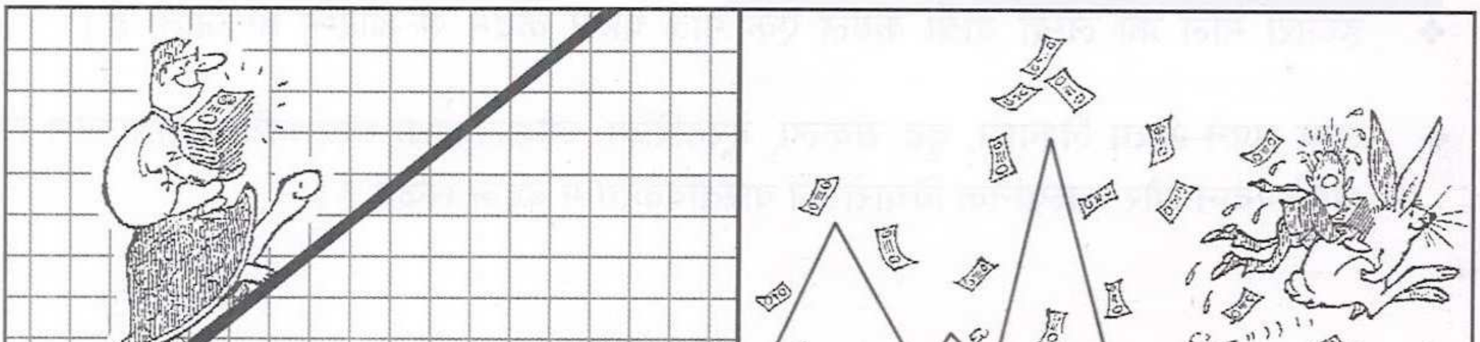

- केवल अपने आत्म बल, आत्म विश्वास और जोखिम उठाने की गणनात्मक योग्यता पर विश्वास करता है।

- बिना सोचे समझे जोखिम उठाने पर विश्वास करता है।

दीपक राणा
जन संपर्क अधिकारी

आओ अपने राष्ट्र को सलामी दें

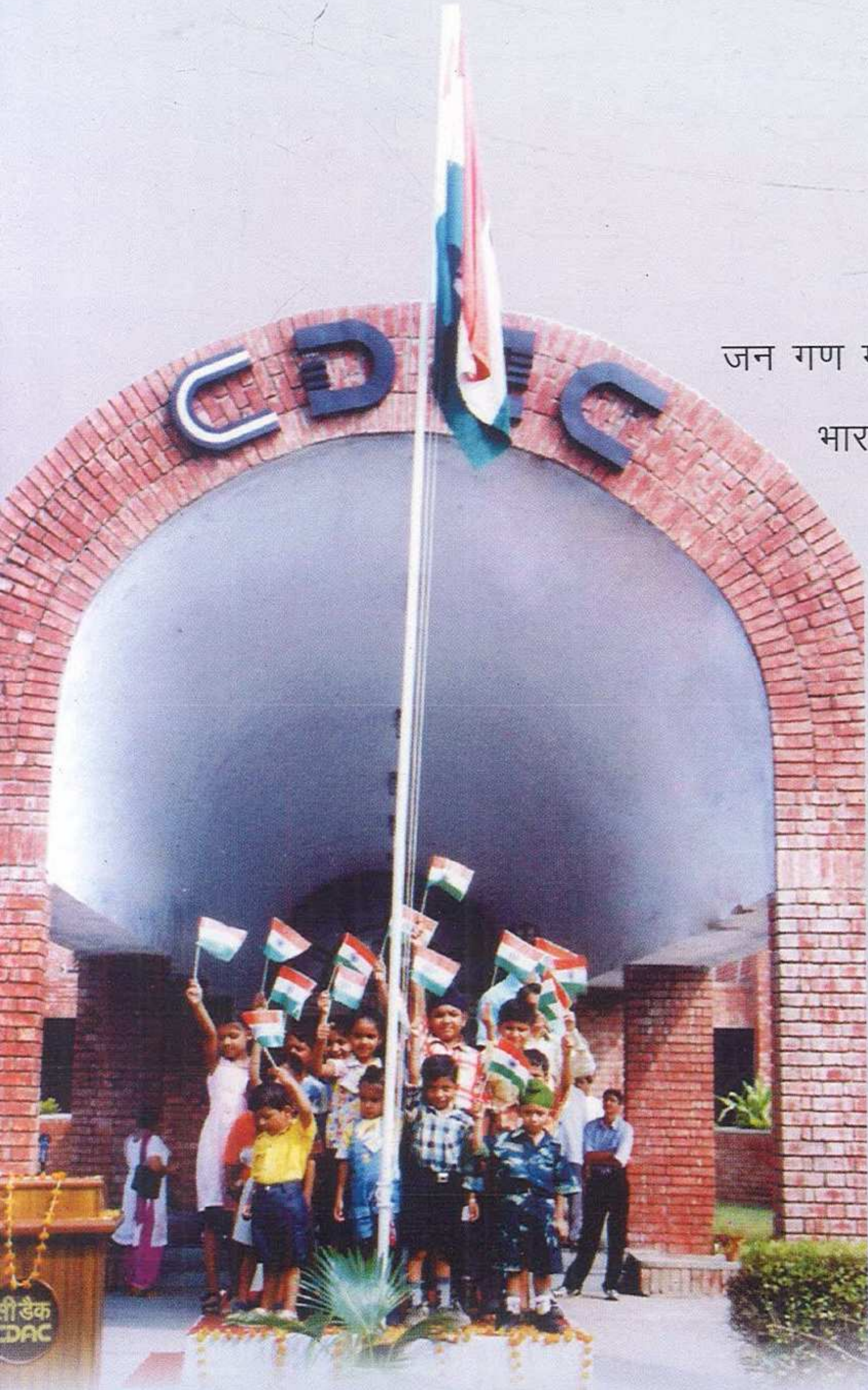

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंगा
विंध्य हिमाचल युमना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

सी-डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र

CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

A Scientific Society of the Ministry of Communications and Information Technology, Government of India

A-34, Industrial Area, Phase-VIII, Mohali - 160071, (Near Chandigarh) Punjab. INDIA.

Phone: +91-172-2237052-57 Fax: +91-172-2237050-51

Website: www.cdacmohali.in